प्राथमिक शिक्षा पाठ्यचर्या - २०१२

भाषा भाग - २

कक्षा १ ली से ८ वीं

विषय : हिंदी (प्रथम भाषा)

प्राथमिक शिक्षा पाठ्यचर्या- २०१२

भाषा भाग - २

कक्षा १ ली से ८ वी

विषय : हिंदी (प्रथम भाषा)

अनुक्रमणिका

अ. क्र.	प्रकरण	पृष्ठ
१.	प्रस्तावना	१२५
२.	हिंदी प्रथम भाषा के सामान्य उद्‌देश्य	१२७
३.	हिंदी प्रथम भाषा के विशिष्ट उद्‌देश्य	१२९
४.	हिंदी प्रथम भाषा पाठ्यक्रम – पहली से चौथी	१३१
५.	हिंदी प्रथम भाषा पाठ्यक्रम – पाँचवीं से आठवीं	१९३
६.	अध्ययन–अध्यापन संबंधी निर्देश	२७८
७.	मूल्यांकन संबंधी निर्देश	२८१

प्राथमिक शिक्षा पाठ्यचर्या २०१२

इयत्ता - १ ली से ८ वीं

विषय - हिंदी प्रथम भाषा

प्रस्तावना

भाषा मनोभावों को व्यक्त करने का एक सशक्त माध्यम है। भाषा के अभाव में एक-दूसरे से संपर्क करना कठिन-सा हो जाता है। घर-परिवार में बालक अपनी माता से ही अनौपचारिक भाषा सीखना आरंभ करता है। परिवार के अंतर्गत बोली जाने वाली भाषा को मातृभाषा कहा जाता है।

हम भाषा के माध्यम से ही विचार-विनिमय करने में सक्षम हुए हैं। हमारे दैनिक जीवन के अधिकतर व्यवहार हम अपनी मातृभाषा में ही करते हैं।

भारत विभिन्न संस्कृतियों से समृद्ध एक विशाल देश है। यहाँ अनेक बोलियाँ एवं भाषाएँ बोली जाती हैं। इस देश की सबसे बड़ी उल्लेखनीय विशेषता यह हैं कि यहाँ सांस्कृतिक एवं भाषाई विभिन्नताओं में भी राष्ट्रीय एकात्मता के दर्शन होते हैं। संपूर्ण देश में विविध भाषी लोग आपस में संपर्क करने हेतु एक सामान्य भाषा के रूप में हिंदी भाषा का उपयोग करते हैं। विविधताओं से परिपूर्ण इस बहुभाषी प्रदेश में परस्पर संपर्क, विचारों के आदान-प्रदान, राष्ट्रीय एवं भावात्मक एकात्मता संवैधानिक मूल्यों को सुसंगत ढंग से सँजोए रखना समय की माँग है। तदर्थ हिंदी सशक्त एवं सक्षम भाषा है।

अतीत से वर्तमान तक श्रेष्ठ एवं ज्येष्ठ महाविभूतियों ने अपने ओजस्वी एवं ज्ञानवर्धक विचारों को जनसामान्य तक पहुँचाने के लिए राष्ट्रीय स्तर पर अधिकतर हिंदी भाषा का उपयोग किया है। स्वतंत्रता आंदोलन में भी संपर्क भाषा हिंदी की भूमिका महत्वपूर्ण रही है। स्वातंत्र्योत्तर काल से वर्तमानकाल तक राष्ट्रीय स्तर पर प्रचार-प्रसार एवं जनसंपर्क हेतु हिंदी भाषा महत्वपूर्ण बनी हुई है। राष्ट्रीय एकात्मता और व्यावहारिक आवश्यकताओं की पूर्ति करने में हिंदी पूर्णतः सक्षम हैं। चूँकि हिंदी इस प्रभुता संपन्न राष्ट्र की जनसंपर्क भाषा है, इसलिए विदेशों में भी हिंदी के अध्ययन-अध्यापन पर विशेष बल दिया जा रहा है। इन्हीं परिस्थितियों को ध्यान में रखकर महाराष्ट्र राज्य के अभ्यासक्रम २०१० के प्रारूप में प्रथम भाषा के रूप में हिंदी सीखने वाले विद्यार्थियों के लिए पहली कक्षा से ही हिंदी को स्थान दिया गया है। लिपि, शब्द भंडार और वाक्य रचना की दृष्टि से अन्य भारतीय भाषाओं की तुलना में हिंदी, मराठी भाषा के अधिक समीप की भाषा है। साथ ही साथ दोनों भाषाएँ देवनागरी लिपि में बद्ध हैं। इसलिए विद्यार्थियों के लिए हिंदी सहज, सरल एवं सुगम भाषा है। महाराष्ट्र में अपनाई गई हिंदी भाषा में मराठी भाषा के अनेक बहुप्रचलित शब्दों को सम्मिलित किया गया है। हिंदी के विकास में महाराष्ट्र के संतों का बहुत बड़ा योगदान रहा है। महाराष्ट्र में हिंदी की लोकप्रियता का स्तर ऊँचा है।

हिंदी की विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए पाठ्यक्रम बनाते समय निम्नलिखित बिंदुओं को समाहित किया गया है -

विद्यार्थियों की शारीरिक, मानसिक भावनिक एवं सामाजिक आवश्यकताओं को अंतर्भूत किया गया है।

२००५ की राष्ट्रीय पाठ्यचर्या ढाँचा (NCF) एवं SCF द्‌वारा भाषा शिक्षा के संदर्भ में दिए गए निर्देशों का ध्यान रखा गया है। इसी तरह आर. टी. ई के निर्देश भी ध्यान में रखे गए हैं। अध्ययन–अध्यापन की प्रक्रिया में विद्‌यार्थियों के भाषिक कौशलों के आकलन, उपयोजन, सर्जनशील प्रयोग आदि क्षमताओं के विकास को विशेष महत्व दिया गया है। ज्ञानरचनावाद का ध्यान रखते हुए पाठ्यक्रम पूर्णतः बालकेंद्रित एवं कृतिशील बनाया गया है। पाठ्यक्रम में यथास्थान परिसर अध्ययन को समाविष्ट करते हुए जीवन कौशलों के विकास का पूर्ण ध्यान रखा गया है। लिंग समभाव के तत्व एवं मूल्यशिक्षा को पाठ्यक्रम में यथोचित स्थान देते हुए केंद्रीय आधारभूत तत्वों का भी समावेश किया गया है। पाठ्यक्रम में जगह–जगह अत्यंत स्वाभाविक ढंग से भाषा के साथ अन्य विषयों का ताल–मेल बिठाया गया है। साथ ही इस बात का ध्यान रखा गया है कि आनंददायी शिक्षा में कहीं भी बाधा न आए। यह सब करते हुए विद्‌यार्थियों का निरंतर एवं सर्वंकष मूल्यांकन होता रहे, यह बात भी ध्यान में रखी गई है।

इस पुनर्रचित नवीन पाठ्यक्रम में जहाँ एक ओर जनतांत्रिक नीति योजना को प्राधान्य दिया गया है, रटने की पद्‌धति का परित्याग किया गया है, वहीं दूसरी ओर अनुभवसिद्‌ध पद्‌धतियों का भी ध्यान रखा गया है। जनसंख्या शिक्षा, पर्यावरण शिक्षा, कार्यानुभव, कलाशिक्षा, विश्वशांति तथा विश्वबंधुत्व की भावना को पाठ्यक्रम में समाविष्ट किया गया है। भाषाई खेलों के माध्यम से भाषाई शिक्षा को तनावरहित एवं आनंददायी बनाया गया है। प्रस्तुत पाठ्यक्रम में इस बात का भी ध्यान रखा गया है कि भाषा की शिक्षा से विद्‌यार्थियों में सृजनशीलता निर्मित हो। वे उपक्रमशील बनें तथा उनमें शोधवृत्ति का निर्माण हो। हिंदी को व्यवसायोन्मुख बनाया गया है, उसी तरह राज्य एवं राष्ट्र की विविध समस्याओं को भी महत्व दिया गया है। भाषा शिक्षा के सर्वसामान्य उद्‌देश्य एवं प्रथम भाषा के रूप में कक्षा पहली से आठवीं तक हिंदी के विशिष्ट उद्‌देश्य स्पष्ट रूप से उल्लिखित किए गए हैं। प्रस्तुत पाठ्यक्रम में अध्ययन–अध्यापन विषयक नई सोच, नई पद्‌धति, जीवन कौशल, आधुनिक तकनीक एवं तत्व, व्यावहारिक परिवर्तन, निरंतर व्यापक मूल्यांकन के प्रयोगशील, प्रभावी और समयोचित स्वरूप को भी स्वीकार किया गया है।

वर्तमान और भावी चुनौतियों और आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर विद्‌यार्थियों को हिंदी भाषा में सर्वांगीण सक्षम बनाने हेतु पाठ्यक्रम में उपयुक्त कई विशिष्ट बातों को समाविष्ट किया गया है। तदर्थ पाठ्यक्रम के प्रारूप को निश्चित करते समय पाठ्यक्रम पुनर्रचना समिति ने भाषाई कौशलधिष्ठित प्रारूप को स्वीकार करने का निर्णय लिया। इसमें चार भाषाई कौशलों के साथ–साथ हिंदी की व्याकरणिक संरचना (क्रियात्मक व्याकरण) तथा व्यवहार एवं विविध व्यवसायों में हिंदी प्रयोग के स्वरूप (व्यावहारिक सृजन) को महत्वपूर्ण स्थान देना तर्कसंगत एवं उपयुक्त माना गया है। पुनर्रचित पाठ्यक्रम में भाषाई कौशलों/क्षेत्रों को सबसे ऊपर रखते हुए हर कौशल/क्षेत्र के घटकों–उपघटकों को इसके अंतर्गत क्रमानुसार स्थान दिया गया है।

राष्ट्रीय शैक्षणिक अनुसंधान व प्रशिक्षण परिषद द्‌वारा निर्देशित 'ERAC' अर्थात E-Experience, R- Reaction, A- Application C- Consolidation के अनुरूप पाठ्यक्रम पुनर्रचना समिति के सदस्यों ने पर्याप्त चर्चा के बाद कक्षा पहली से आठवीं का प्रथम भाषा हिंदी का पाठ्यक्रम 'ERAC' को ध्यान में रखकर विद्‌यार्थियों के सर्वांगीण विकास की दृष्टि से तैयार किया है। प्रस्तुत पाठ्यक्रम दिए गए अध्ययन अनुभव तथा उपक्रमों की सहायता से प्रथम भाषा के रूप में हिंदी के उद्‌देश्यों की पूर्ति करने में सहायक सिद्‌ध होगा।

विषय : हिंदी (प्रथम भाषा)

कक्षा – पहली से आठवीं

सामान्य उद्‌देश्य

परिवार विद्‌यार्थी की पहली पाठशाला है और माँ पहला गुरु। बोलचाल की भाषा से तो वह परिवार में ही परिचित हो जाता है परंतु मानक भाषा के अध्ययन–अध्यापन की आवश्यकता होती है। इच्छुक एवं आवश्यकतानुसार अन्य मातृभाषावाले विद्‌यार्थी भी प्रथम भाषा के रूप में हिंदी का अध्ययन करते हैं। देवनागरी लिपि होने के कारण हिंदी का पठन–पाठन महाराष्ट्र में सहज–सरल है। इन्हीं परिस्थितियों और तथ्यों को ध्यान में रखते हुए कक्षा पहली से आठवीं तक प्रथम भाषा के रूप में हिंदी के अध्ययन के निम्नलिखित उद्‌देश्य निर्धारित किए गए हैं –

१. विविध माध्यमों का उपयोग कर श्रवण क्षमता का विकास करना।
२. हिंदी में धारा प्रवाह तथा प्रभावी भाषण – संभाषण का विकास करना।
३. विद्‌यार्थियों में साहित्य पठन के प्रति अभिरुचि जागृत करना।
४. हिंदी के माध्यम से रसास्वादन एवं सौंदर्यबोध जगाने के साथ ही अपने विचारों और भावनाओं को लिखित रूप में अभिव्यक्त करने की क्षमता विकसित करना।
५. दैनिक जीवन के व्यवहारों में हिंदी भाषा के प्रयोग हेतु प्रवृत्त करना।
६. बोली भाषा के साथ अपनत्व की भावना को बढ़ावा देना।
७. अन्य भाषाओं के साथ आत्मीयता का भाव जगाना।
८. अन्य विषयों के साथ हिंदी भाषा का सामंजस्य स्थापित करना।
९. ज्ञानवर्धन एवं मनोरंजन हेतु पूरक पठन की अभिरुचि निर्माण करना।
१०. अध्ययन हेतु हिंदी भाषा के नए–नए शब्दों का संग्रह तैयार करना।
११. उचित भाषा प्रयोग द्‌वारा हिंदी के अनौपचारिक व औपचारिक भाषा रूपों में सामंजस्य स्थापित करना।
१२. विराम चिह्नों के अनुरूप हिंदी का पठन एवं लेखन करने की ओर प्रवृत्त करना।
१३. साहित्य के विविध प्रकारों के रसग्रहण की क्षमता विकसित करना।
१४. प्रकाशित साहित्य के साथ–साथ नाटक, चित्रपट, रेडियो, दूरदर्शन, संगणक, सी.डी., डी.वी.डी आदि माध्यमों से भाषाई अनुभवों को समृद्ध करना।
१५. हिंदी द्‌वारा मानवीय मूल्यों के प्रति सजगता पैदा करना।
१६. विविध उपक्रमों द्‌वारा संवैधानिक मूल्यों के परिपोषण हेतु प्रवृत्त करना।
१७. हिंदी द्‌वारा आपातकालीन प्रबंधन, मानवाधिकार एवं सर्वसमावेशित शिक्षा के प्रति जागृति पैदा करना।

१८. हिंदी के माध्यम से विद्यार्थियों में निहित वैयक्तिक, चारित्रिक गुणों तथा जीवन कौशलों को विकसित करना।

१९. केंद्रीय तत्त्वों के साथ–साथ पर्यावरण संबंधी चेतना की जागृति, विश्वशांति, विश्व–बंधुत्व और नैतिक मूल्यों का संवर्धन करने हेतु प्रवृत्त करना।

२०. उत्तम अभिरुचि एवं सौंदर्य दृष्टि का विकास करना।

२१. सर्जनशील अभिव्यक्ति को बढ़ावा देते हुए प्रेरित करना।

२२. अपनी भाषाई एवं सांस्कृतिक विरासत का जतन करने हेतु प्रवृत्त करना।

२३. हिंदी भाषा व साहित्य के माध्यम से व्यक्तित्व का विकास करना।

२४. भाषा शिक्षण को बोझ एवं तनाव रहित बनाते हुए शिक्षा के अधिकार के अनुसार सभी को शिक्षा के अवसर प्रदान करना।

२५. ज्ञानरचनावाद का उपयोग करते हुए नवीन संकल्पनाओं से विद्यार्थियों को अवगत कराना।

२६. विद्यार्थियों को जीवनोपयोगी व्यवसायोपयोगी हिंदी के रूपों से परिचित कराना।

विषय : हिंदी (प्रथम भाषा)

कक्षा – पहली से आठवीं

विशिष्ट उद्देश्य

भारत बहुभाषी देश है। यहाँ बहुसंख्य जनसमुदाय की व्यावहारिक एवं संपर्क भाषा हिंदी है। भारतीय संविधान में हिंदी भाषा को राजभाषा के रूप में स्वीकृत किया गया है। हिंदी भाषा देश के भिन्न–भिन्न मातृभाषावाले राज्यों को जोड़ने वाली प्रमुख कड़ी भी है। राजभाषा की हैसियत से यह अपेक्षित है कि बैंक, विधि, विज्ञान आदि के क्षेत्रों सहित लगभग सभी क्षेत्रों में हिंदी में व्यवहार हो। संघराज्य के विविध प्रांतों के कार्यालय अपने प्रांतीय व्यवहार अपनी प्रांतीय भाषा में करें, किंतु राष्ट्रीय व्यवहार यथासंभव हिंदी में किए जाए। वर्तमान समय में अधिकाधिक सरकारी व गैर सरकारी क्षेत्रों में हिंदी प्रयोग की मात्रा बढ़ती जा रही है। हमें अपनी भावी पीढ़ी को हिंदी भाषा में अच्छी तरह तैयार करने की आवश्यकता है। हिंदी की बहु–उपयोगिता को देखते हुए महाराष्ट्र राज्य ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुसार राज्य में रहने वाले हिंदी भाषियों एवं अन्य इच्छुक विद्‌यार्थियों की सुविधा का ध्यान रखते हुए प्रथम भाषा के रूप में हिंदी अध्यापन का प्रावधान किया है। भाषा और साहित्य के अध्ययन के माध्यम से अनेक सामाजिक परंपराओं का रक्षण किया जाता है। सर्वधर्म समभाव, राष्ट्रीय एकात्मता, राष्ट्र प्रेम, राष्ट्रीय चरित्र, स्त्री–पुरुष समानता आदि जीवन मूल्य विकसित होते हैं।

इन सभी बातों को ध्यान में रखते हुए हिंदी के विशिष्ट उद्‌देश्यों का निर्धारण नितांत आवश्यक है। अतः पहली से आठवीं तक की कक्षाओं के लिए हिंदी के अध्ययन–अध्यापन के विशिष्ट उद्‌देश्य भी निश्चित किए गए हैं। ये विशिष्ट उद्‌देश्य निम्नलिखित हैं –

विशिष्ट उद्‌देश्य

१. घर, परिवार, परिसर, आकाशवाणी, दूरदर्शन, चलचित्र, संगणक व अन्य दृक–श्राव्य माध्यमों और शैक्षणिक संसाधनों द्‌वारा रुचिपूर्वक श्रवण हेतु प्रेरित करना।

२. परिजनों के साथ–साथ पड़ोसियों एवं मित्र परिवार के माध्यम से भाषण–संभाषण द्‌वारा दैनिक व्यवहार में व्यवधान रहित हिंदी बोलना।

३. पाठ्‌य एवं पाठ्‌येत्तर सामग्री द्‌वारा ऐसी परिस्थितियों का निर्माण करना जिससे विद्‌यार्थी स्वयं प्रेरणा से वाचन की ओर प्रवृत्त हो। सहायक शैक्षणिक सामग्री के रूप में शैक्षणिक संदर्भ– सामग्री कोना एवं चलित वाचनालय का निर्माण करना।

४. भाव विश्व, कल्पना, ज्वलंत विषय पर अपने मनोगत को लिखित रूप में भाषा–सौंदर्य के साथ अभिव्यक्त कर उसका रसास्वादन करना।

५. प्रचार एवं प्रसार माध्यमों में बोली जाने वाली हिंदी भाषा के प्रयोग हेतु प्रेरित करना।

६. बोली भाषा का सम्मान करते हुए मानक भाषा के प्रयोग की ओर अग्रसर होना।

७. अन्य भाषाओं के बहु प्रचलित शब्दों को हिंदी में स्वीकार करने की मानसिकता का निर्माण करना।

८. अन्य विषयों (विज्ञान, गणित, भूगोल, इतिहास, कार्यानुभव, कला, शारीरिक शिक्षा आदि) की व्यवहारोपयोगी कुछ बातों का समावेश हिंदी पाठ्यक्रम में करना व अन्य विषयों की पारिभाषिक शब्दावली के माध्यम से हिंदी भाषा की शब्दावली को समृद्ध कराना।

९. आरोह-अवरोह, लय-ताल, बलाघात के द्वारा विराम चिह्नों की भाषण-संभाषण, वाचन एवं लेखन में उपयोगिता से अवगत करना।

१०. ज्ञानवर्धक एवं मनोरंजक साहित्यिक विधाओं के माध्यम से विद्यार्थियों में गुणों का विकास करना।

११. हिंदी द्वारा सामाजिक चेतना, सांस्कृतिक विरासत, वैज्ञानिक दृष्टिकोण, श्रमनिष्ठा, परदुखकातरता, प्राणीमात्र के प्रति दया, खेल भावना, सत्यनिष्ठा, आचारनिष्ठा, आदि मानवीय मूल्यों के प्रति सजगता पैदा करके इन गुणों को आत्मसात करने की ओर उन्मुख करना।

१२. भाषा शिक्षण को बोझ व तनाव रहित बनाते हुए सभी के लिए आनंददायी शिक्षा के अवसर उपलब्ध कराना।

१३. ज्ञानरचनावाद के अंतर्गत पूर्वज्ञान व नवीन अध्ययन के माध्यम से नवनिर्मिति का कौशल निर्माण करना।

१४. व्यवहार एवं विविध व्यवसायों में हिंदी प्रयोग की चेतना जगाना।

१५. भाषा अध्ययन द्वारा विद्यार्थियों में जीवन कौशल विकसित करना। भाषाई सौंदर्य व सांस्कृतिक एकता की ओर प्रेरित करना।

१६. विविध भाषाई खेलों द्वारा संवैधानिक मूल्यों (स्वतंत्रता, समता, न्याय बंधुत्व) तथा राष्ट्रीय एकात्मता, राष्ट्रप्रेम, धर्म निरपेक्षता एवं सर्वधर्म समभाव के परिपोषण हेतु उन्मुख करना।

१७. प्राकृतिक आपदाएँ (बाढ़, सूखा, सुनामी, भूकंप, अग्निकांड आदि), मानवाधिकार (नागरिक) के मूलभूत अधिकार (वैचारिक स्वतंत्रता, धार्मिक स्वतंत्रता आदि) एवं सर्व समावेशित शिक्षा के प्रति जागृति पैदा करना।

१८. पर्यावरण संबंधी चेतना, विश्वशांति, विश्वबंधुत्व और नैतिक मूल्यों की ओर उन्मुख करते हुए सभी केंद्रीय तत्त्वों का संवर्धन करने हेतु प्रवृत्त करना।

विषय : हिंदी (प्रथम भाषा) : पाठ्यक्रम

भाषाई कौशल/क्षेत्र – श्रवण **कक्षा – पहली**

अ. क्र.	अध्ययन अनुभव	अध्ययन–अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
	भाषाई खेल – हँसते–हँसते करो नमस्ते! * शिक्षक कक्षा में आनंददायी वातावरण तैयार करें। * सभी विद्यार्थियों का स्वागत अभिनंदन करें। * नमस्ते। प्रणाम कहें। करें। * विद्यार्थी सुनकर नमस्ते/प्रणाम करें * दो–दो का गुट बना कर एक–दूसरे को नमस्ते करें। * कक्षा को दो गुटों में बाँट कर सामूहिक रूप में नमस्ते। प्रणाम करें।	* चित्र कार्ड * शब्द कार्ड * नमस्ते/प्रणाम करते प्राणियों के कार्टून चित्र * अन्य संदर्भ साहित्य	* विद्यार्थी नमस्ते/प्रणाम की कृति करता है * बडों के प्रति आदर विकसित होता है। * संस्कारों का बीजारोपण होता है।	* निरीक्षण * प्रात्यक्षिक * कक्षाकार्य
१.	पूर्व परिचित लयात्मक गीत सुनाना, अभिनय गीत सुनाना।	* लयात्मक गीत के चार्ट, * सी. डी. * डी. वी. डी. * ध्वनिफीत	* लयात्मक गीत, अभिनय गीत सुनने में रुचि लेता है। * ध्यानपूर्वक सुने हुए शब्दों को दोहराता है। (लयात्मक गीत एवं अभिनय गीत सुनने से तनाव का समायोजन होता है।	* निरीक्षण * प्रात्यक्षिक * कक्षाकार्य
२.	पशु–पक्षियों की मनोरंजक कथा सुनना–सुनाना।	* चित्र चार्ट * सी. डी. * डी. वी. डी. * ध्वनिफीत, संदर्भ साहित्य	* ध्यानपूर्वक कहानी सुनता है। * सुने हुए शब्द कक्षा में सुनाता है। * प्राणीमात्र के प्रति प्रेमभावना जागृत होती है।	

अ. क्र.	अध्ययन अनुभव	अध्ययन-अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
३.	लयात्मक बालगीत, मित्रतासंबंधी मनोरंजक कथाएँ समझते हुए सुनना एवं तदनुरूप कृति करना।	* सीडी; डी. वी. डी., * ध्वनिफीत, रेडियो, * संदर्भ साहित्य आदि	* लयात्मक बालगीत, मनोरंजक कथा ध्यानपूर्वक सुनता है और आकलन के आधार पर कृति करता है। * सुने हुए लयात्मक शब्द दोहराता है। * सुनी हुई कथा का आशय समझने की ओर उन्मुख होता है। * मित्रता, मेलजोल बढ़ता है।	* निरीक्षण * प्रात्यक्षिक * कक्षाकार्य
४.	मौखिक सूचना, आदेश को सुनकर उसके अनुसार कृति करना। उदा. बैठ जाओ। कतार में शांतिपूर्वक खड़े रहो। फलक की तरफ ध्यान दो। आदि।	* अलग-अलग सूचनाओं आदेशों के संकेत चिह्नों के चार्ट	* मौखिक सूचना, आदेश ध्यानपूर्वक सुनता है। * सुनी हुई सूचना एवं आदेश का आशय समझते हुए कृति करता है। * अनुशासन तथा बड़ों के प्रति आदरभाव जागृत होता है।	* निरीक्षण * प्रात्यक्षिक * कक्षाकार्य * सहपाठी मूल्यांकन
५.	परिसर के प्राणियों, पक्षियों की ध्वनियाँ सुनकर पहचानना।	* प्राणियों-पक्षियों के चित्रों के चार्ट्स * पशु-पक्षियों की ध्वनियों की सी. डी., डी. वी. डी. आदि.	* परिसर के प्राणी-पक्षियों की ध्वनियों को ध्यानपूर्वक एवं रुचि लेते हुए सुनता है। ध्वनि सुनकर पशु-पक्षियों के नाम सुनाता है। * पशु-पक्षियों और उनकी ध्वनियों के बीच सहसंबंध जोड़ता है। * पशु-पक्षियों के प्रति प्रेम एवं देखभाल की भावना जागृत होती है।	* निरीक्षण * प्रात्यक्षिक * कक्षाकार्य * सहपाठी मूल्यांकन

अ. क्र.	अध्ययन अनुभव	अध्ययन–अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
६.	वर्ण, विशेष वर्ण, अनुनासिक, अनुस्वार, विसर्ग, संयुक्ताक्षर का श्रवण के माध्यम से परिचय करना–कराना।	वर्ण कार्ड, शब्दकार्ड, चित्र, सी. डी., डी. वी. डी., ध्वनिफीत	✻ वर्ण, विशेष वर्ण, संयुक्ताक्षर, विसर्ग, अनुनासिक, अनुस्वारयुक्त वर्ण एवं शब्द सुनने में रुचि लेता है। ✻ विविध ध्वनियों के अंतर को समझता है। विशेष वर्ण एवं शब्द कक्षा में सुनाता है। ✻ वर्ण एवं अंकों के क्रम से परिचित होता है।	✻ निरीक्षण ✻ प्रात्यक्षिक ✻ समूहकार्य ✻ कक्षाकार्य
७.	बारहखड़ी के उच्चारण सुनना–सुनाना।	मात्रा सहित वर्णों के कार्ड बारहखड़ी का चार्ट सी. डी. डी. वी. डी. ध्वनिफीत	✻ बारहखड़ी ध्यानपूर्वक सुनता है। ✻ बारहखड़ी के वर्णों को सुनकर कक्षा में सुनाता है। ✻ वर्ण और मात्राओं का मेल श्रवण के माध्यम से पहचानता है। ✻ मात्रायुक्त वर्णों के ह्रस्व–दीर्घ उच्चारण को समझते हुए सुनता है। ✻ कक्षा में मात्रायुक्त वर्ण सही उच्चारण के साथ सुनाता है।	✻ निरीक्षण ✻ प्रात्यक्षिक ✻ कक्षाकार्य ✻ सहपाठी मूल्यांकन

विषय : हिंदी (प्रथम भाषा) पाठ्यक्रम

भाषाई कौशल/क्षेत्र : भाषण–संभाषण **कक्षा – पहली**

अ. क्र.	अध्ययन अनुभव	अध्ययन–अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
	भाषाई खेल : 'मैं भी बना/बनी नवाब' **कृति** : अध्यापक को उसके घर की चीजों के नाम बताने के लिए कहें। विद्यार्थी अपने पूर्वानुभव के आधार पर घर की वस्तुओं, भाई–बहन के खिलौनों, प्राणियों, फूलों, फलों, सब्जियों के नाम बताते हैं। जो विद्यार्थी सबसे अधिक और सहज रूप से नाम बताए, उसे 'नवाब' की उपाधि मिलेगी।	* घर एवं घर की वस्तुओं के चित्र, चार्ट	* रुचिपूर्वक अपने घर की वस्तुओं के नाम बताता है। * कक्षा के अन्य विद्यार्थियों द्वारा दी गई जानकारी दोहराता है। * वस्तुओं के नाम बताते हुए वर्णों का सही उच्चारण करने की ओर प्रवृत्त होता है। * चित्र में देखी हुई चीजों के नाम से परिचित होता है।	* निरीक्षण * प्रात्यक्षिक * मौखिक * कक्षाकार्य
१.	पूर्व परिचित विषयों के लयात्मक गीत, मित्रता, स्वच्छता, प्रकृति संबंधी बालगीत, अभिनय गीत की प्रस्तुति करना।	* बालगीत संग्रह * अभिनय गीत के चार्ट * सी.डी, डी.वी.डी. * अन्य संदर्भ साहित्य	* भाषण संभाषण में रुचि लेता है। * पूर्व परिचित लयात्मक गीत, बालगीत, अभिनय गीत प्रस्तुत करता है। * सुने हुए बालगीत, अभिनय गीत, लयात्मक गीत दोहराता है। * भावना और तनाव का समायोजन होता है। * आपस में संबंध स्थापित करने हेतु उन्मुख होता है। * शारीरिक स्वच्छता की ओर ध्यान देता है। * परिसर की वस्तुओं, पेड पौधों से लगाव।	* निरीक्षण * प्रात्यक्षिक * मौखिक * एकल एवं सामूहिक प्रस्तुति का निरीक्षण

अ. क्र.	अध्ययन अनुभव	अध्ययन-अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
२.	परिवेश से संबंधित परिचित छोटी कहानी सुनाना/अपरिचित कहानी सुनना/दोहराना। अपने बारे में जानकारी बताना।	* कहानियों के चित्र चार्ट फोल्डर * सी.डी., डी.वी.डी., ध्वनिफीत * संदर्भ साहित्य	* परिवेश के पशु, प्राणी, पक्षी आदि की कहानियाँ बताता है। * रुचि लेते हुए दूसरे द्‌वारा बताई गई कहानी अपने शब्दों में बताता है। * उत्साहपूर्वक अपने बारे में जानकारी देता है। * बोलते समय स्पष्ट उच्चारण की ओर उन्मुख होता है। * परिसर के प्राणी जगत से तादात्म्य स्थापित करता है। * प्राणी, पौधों की देखभाल की भावना जागृत होती है।	* निरीक्षण * प्रात्यक्षिक * मौखिक * कक्षाकार्य
३.	बालगीत, मनोरंजक कहानी साभिनय एकल एवं सामूहिक रूप से प्रस्तुत करना। घर की वस्तुएँ, परिचित फूल, फल के नाम बताना।	* बालगीत संग्रह * कथा संग्रह * चित्र चार्ट * कथा एवं गीत * सी.डी. * डी.वी.डी. * संदर्भ साहित्य	* बालगीत, मनोरंजक कहानी का आनंद लेते हुए उनकी साभिनय प्रस्तुति करता है। * सामूहिक प्रस्तुति में उत्साहपूर्वक सहभागी होता है। * भावना-तनाव का समायोजन होता है। * गुट में कार्य करने की वृत्ति जागृत होती है। * घर की वस्तुएँ, परिचित फूल, फल प्राणी के नाम बताता है।	* कृति- मौखिक, लिखित * प्रात्यक्षिक * निरीक्षण * कक्षाकार्य

अ. क्र.	अध्ययन अनुभव	अध्ययन–अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
४.	'प्राणियों–पंछियों' की ध्वनियों की नकल करना तथा ध्वनियों में आए वर्णों को पहचानकर दोहराना।	* प्राणी, पंछी, पशु के चित्र * ध्वनि शब्दों के चार्ट * सी.डी., डी.वी.डी. * ध्वनिफीत * संदर्भ साहित्य	* परिचित पंछियों, प्राणियों की ध्वनियाँ बोलता है। * अपरिचित प्राणी–पक्षी की बोलियों को सुनकर उनकी नकल करता है। * ध्वनियों में आए वर्णों से परिचित होता है। तथा उन्हें दोहराता है। * पशु–पक्षियों की ध्वनियों में अंतर को समझते हुए उनके वर्गीकरण की ओर उन्मुख होता है। * प्राणी, पशु, पक्षी जगत से आत्मीयता बढ़ती है। * चित्र पर आधारित प्रश्नों के उत्तर देता है।	* निरीक्षण * प्रात्यक्षिक * मौखिक * कक्षाकार्य * सहपाठी मूल्यांकन
५.	शब्दों के माध्यम से वर्ण, विशेष वर्ण, अनुनासिक, अनुस्वार, विसर्ग, संयुक्ताक्षर सुनकर बताना–दोहराना।	* वर्ण चार्ट * शब्द चार्ट * बारहखड़ी चार्ट	* वर्ण एवं मात्रायुक्त वर्णों का सही उच्चारण करता है। * बारहखड़ी को ध्यानपूर्वक सुनते हुए मानक उच्चारण करता है। * ध्यानपूर्वक सुनते हुए मात्रायुक्त शब्दों का सही उच्चारण करता है। * वर्णों की ध्वनियों से परिचित होकर ध्वनि एवं वर्ण में संगति बिठाने की कोशिश करता है। * स्वर–व्यंजन, मात्रा एवं मात्रायुक्त शब्दों के स्पष्ट मानक उच्चारण की ओर उन्मुख होता है। * मात्रा रहित एवं मात्रा सहित वर्णों के अंतर को समझते हुए वर्गीकरण करता है।	* मौखिक * निरीक्षण * कक्षाकार्य

विषय : हिंदी (प्रथम भाषा) पाठ्यक्रम

भाषाई कौशल/क्षेत्र : वाचन **कक्षा – पहली**

अ. क्र.	अध्ययन अनुभव	अध्ययन–अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
१.	* **भाषाई खेल–चित्रवाचन** **कृति** : चित्र के माध्यम से मात्रा रहित शब्दों में आए वर्णों की पहचान करना–कराना। कृति – अध्यापक के संकेत पर विद्यार्थी अपना चित्र कार्ड दिखाएँ। चित्र से संबंधित वर्ण। शब्द कार्डवाले विद्यार्थी उसके साथ खडे हों। वर्ण, शब्द पढें उदा. नल = न ल घर, हल, रथ, आदि	* चित्र कार्ड * वर्ण कार्ड * शब्द कार्ड –	* उत्साहपूर्वक चित्र देखकर उसका नाम पहचानकर बताता है। * वर्णों के आकार से परिचित होता है। * चित्र और वर्ण में संगति बिठाता है। * अपने पूर्वज्ञान का उपयोग करना सीखता है। * निर्णय लेने की ओर अग्रेसर होता है।	* निरीक्षण * कक्षाकार्य * कृति * प्रात्यक्षिक
	* **अनुवाचन :** लयात्मक शब्द, छोटे–छोटे वाक्य, लयात्मक गीत का अनुवाचन करना।	* शब्द चार्ट * वाक्य चार्ट * गीत चार्ट * वाक्य पट्टियाँ * संदर्भ साहित्य	* ध्यानपूर्वक एकाग्रता से सुने हुए लयात्मक शब्द, छोटे–छोटे वाक्यों का अनुवाचन करने में रुचि लेता है। * वर्ण एवं उच्चारण में संगति बिठाते हुए अनुवाचन करने की क्षमता विकसित होती है। * वर्णों का आकार एवं उच्चारण को समझते हुए वाचन करता है। * उचित लय, ताल, गति से अनुवाचन करने की ओर उन्मुख होता है। * स्वयंस्फूर्त होकर वाचन का प्रयास करता है।	* निरीक्षण * कक्षाकार्य * प्रात्यक्षिक * कृति

अ. क्र.	अध्ययन अनुभव	अध्ययन–अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
२.	* **अनुवाचन एवं वाचन–** * मात्रा रहित वर्ण, मात्रा सहित वर्ण * मात्रा रहित शब्द, मात्रा सहित शब्द * बारहखड़ी का अनुवाचन–वाचन	* वर्ण चार्ट/कार्ड * शब्द चार्ट/शब्दकार्ड * मात्रा रहित एवं मात्रा सहित शब्द चार्ट * बारहखड़ी का चार्ट * संदर्भ साहित्य	* मात्रा रहित/मात्रा सहित वर्णों का अनुवाचन, वाचन करने में रुचि लेता है। * उत्साहपूर्वक मात्रा रहित/मात्रा सहित शब्दों का वाचन करता है। * बारहखड़ी के अनुवाचन, वाचन में आनंद लेता है। * वर्ण एवं मात्रा में संगति बिठाता है। * वर्णों में मात्रा लगाकर अनुवाचन, वाचन करने का प्रयास करता है। * मात्रा लगाकर नए–नए शब्द बनाकर वाचन करता है। * नए शब्दों का भंडार समृद्ध होता है। * रचनात्मकता का विकास होता है।	* निरीक्षण * मौखिक * प्रात्यक्षिक * कक्षाकार्य
३.	* **मुखर वाचन –** वर्णमाला, लयात्मक शब्द, सुवचन, सरल वाक्यों का मुखर वाचन।	* वर्णमाला चार्ट * लयात्मक शब्द चार्ट * वाक्य पट्टी * सुवचन पट्टी (एकता, स्वच्छता, मित्रता आदि)	* उत्साह के साथ वर्णमाला का प्रकट वाचन करता है। * लयात्मक शब्दों के वाचन में रुचि लेता है। * छोटे–छोटे सरल वाक्य बिना रुके वाचन करने का प्रयास करता है। * सुवचन पट्टी का सहजता से वाचन करने में रुचि लेता है। * सुवचनों से जीवन मूल्यों का परिचय होता है। * प्रकट वाचन में आत्मविश्वास बढ़ता है। * मानक उच्चारण की ओर अग्रसर होता है।	* निरीक्षण * मौखिक * प्रात्यक्षिक * कक्षाकार्य

अ. क्र.	अध्ययन अनुभव	अध्ययन-अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
४.	छोटे बालगीत एवं बोधकथा का मुखर वाचन	* बालगीत चार्ट * कथा चार्ट/ * चित्र कथा चार्ट * संदर्भ साहित्य	* छोटे बालगीत एवं बोधकथा का वाचन रुचि के साथ करता है। * शुद्ध एवं मानक उच्चारण के प्रति उन्मुख होता है। * बोधकथा से प्राप्त नैतिक एवं जीवन मूल्यों से परिचित होता है। * बोधकथा के पात्रों से सहसंबंध स्थापित करता है। सम अनुभूति की भावना जागृत होती है।	* निरीक्षण * मौखिक * सहपाठी मूल्यांकन * स्वाध्याय
५.	फलक, सुवचन की तालिका का वाचन; अंकों का अनुवाचन एवं वाचन नाम, दिन, महीनों की तालिका	* शालेय फलक * सुवचन * वाक्य पट्टियाँ * तालिका चार्ट * सप्ताह के दिनों का चार्ट	* फलक पर लिखे शब्द, वाक्य, तिथि का मुखर वाचन करने में रुचि लेता है। * उत्साह के साथ सुवचनों का वाचन करता है। * सप्ताह के दिनों का क्रमश: वाचन करता है। * वाचन करते समय वर्णों के मानक आकार से परिचित होता है।	* निरीक्षण * मौखिक * प्रात्यक्षिक * कक्षाकार्य * सहपाठी मूल्यांकन * स्वाध्याय

विषय : हिंदी (प्रथम भाषा) पाठ्यक्रम

भाषाई कौशल/क्षेत्र – लेखन **कक्षा : पहली**

अ. क्र.	अध्ययन अनुभव	अध्ययन-अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
	भाषाई खेल – सोचो, समझो और बोलो। कृति – १ : एक विद्‌यार्थी द्‌वारा दूसरें विद्‌यार्थी की पीठ पर उँगली फिराकर विभिन्न सरल आकृतियाँ बनाना। (उदा. गोलाकार, चौकोर, सीधी रेखा) २. विद्‌यार्थी द्‌वारा आकृति को पहचानकर उसका नाम बताना।	—	✻ रुचिपूर्वक खेल में सहभागी होता है। ✻ पीठ पर बनाई हुई आकृति का ध्यानपूर्वक आकलन करता है। अनुमान लगाता है। ✻ आकृति को पहचानता है। निर्णयक्षमता का विकास ✻ पीठ पर बनी हुई आकृति एवं उसके नाम में संगति बिठाता है। ✻ एकाग्रता का विकास होता है।	✻ प्रात्यक्षिक ✻ निरीक्षण ✻ सहपाठी मूल्यांकन
१.	अनुरेखन – वर्णों के अवयव एवं पूर्ण विराम चिह्न पर अनुरेखन करना। आदि	✻ वर्ण के अवयवों के कार्ड एवं चार्ट। ✻ पूर्णविराम चिह्न का कार्ड ✻ संदर्भ साहित्य ✻ वर्णों के स्टेंसिल कार्ड	✻ वर्णों के बने अवयव पर पेंसिल फिराने में रुचि लेता है। ✻ पूर्णविराम के चिह्न पर पेंसिल फिराता है। ✻ वर्णों के स्टेंसिल कार्ड पर पेंसिल द्‌वारा अनुरेखन करता है। ✻ वर्णों के अवयवों से परिचित होता है। ✻ वर्णों की बनावट को पहचानने की ओर उन्मुख होता है। ✻ उँगलियों में पेंसिल पकड़ने की क्षमता विकसित होती है। ✻ स्वयंस्फूर्त भाव से अनुरेखन हेतु प्रवृत्त होता है।	✻ प्रात्यक्षिक ✻ कृति ✻ निरीक्षण ✻ कक्षाकार्य ✻ सहपाठी मूल्यांकन

अ. क्र.	अध्ययन अनुभव	अध्ययन–अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
२.	अनुलेखन : वर्ण एवं शब्द का अनुलेखन करना।	* वर्ण कार्ड। * शब्द कार्ड। * वर्ण चार्ट। * शब्द चार्ट।	* दिए हुए वर्णों एवं शब्दों के अनुलेखन में रुचि लेता है। * दिए गए वर्ण एवं शब्दों के अनुसार सुडौल अनुलेखन का प्रयास करता है। * उँगलियों में पेंसिल पकड़ने में यांत्रिक कुशलता की ओर अग्रसर होता है।	* प्रात्यक्षिक * निरीक्षण * कक्षा कार्य * स्वाध्याय * सहपाठी मूल्यांकन
३.	सुलेखन – वर्ण, शब्द, वाक्य का सुलेखन करना।	* वर्ण कार्ड। * शब्द कार्ड। * शब्द चार्ट। * वाक्य पट्टी। * वाक्य चार्ट।	* विद्यार्थी दिए गए वर्ण, शब्द, वाक्य का सुलेखन करने में रुचि लेता है। * सुडौल एवं सुपाठ्य लेखन की ओर अग्रसर होता है। * वर्णों के आकार एवं अवयव से परिचित होता है। * सुलेखन करने की प्रवृत्ति बढ़ती है।	* प्रात्यक्षिक * निरीक्षण * कक्षा कार्य * स्वाध्याय * सहपाठी मूल्यांकन
४.	श्रुत लेखन – मात्रा रहित वर्ण, मात्रा रहित शब्द, मात्रा सहित वर्ण, मात्रा सहित शब्द, छोटे–छोटे वाक्यों का श्रुतलेखन करना।	* मात्रा रहित वर्ण कार्ड * मात्रा सहित शब्द कार्ड * मात्रा सहित वर्ण कार्ड * शब्द चार्ट * वाक्य चार्ट	* मात्रा रहित एवं मात्रा सहित वर्णों के लेखन में रुचि लेता है। * मात्रा रहित एवं मात्रा सहित शब्दों के लेखन में रूझान बढ़ता है। * छोटे–छोटे वाक्यों के श्रुत लेखन में रुचि लेता है। * वर्णों के लिखित रूपों से परिचित होता है। * मात्राओं का उपयोग करते हुए वर्ण एवं शब्द लेखन की ओर प्रवृत्त होता है। * मात्राओं और चिह्नों से परिचित होता है। * शुद्ध एवं मानक लेखन की और प्रवृत्त होता है।	* प्रात्यक्षिक * कृती * निरीक्षण * सहपाठी मूल्यांकन * सहपुस्तक कसौटी

अ. क्र.	अध्ययन अनुभव	अध्ययन-अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
५.	चित्र के आधार पर शब्द एवं छोटे सरल वाक्यों का लेखन करना। १ से २० तक के अंकों का अक्षरों में लेखन करना।	* चित्र कार्ड। * चित्र चार्ट। * कथा फोल्डर * कथा चित्र * १ से २० तक के अंकों का अक्षरों में लिखा चार्ट।	* दिए हुए चित्रों के आधार पर शब्दों का लेखन करता है। * दिए गए चित्र के आधार पर सरल वाक्यों के लेखन में रुचि लेता है। * सुडौल और सुपाठ्य लेखन की ओर अग्रसर होता है। * शुद्‌ध, मानक शब्दों एवं वाक्यों के लेखन की ओर प्रवृत्त होता है। * १ से २० तक के अंकों का अक्षरों में लेखन की ओर प्रवृत्त होता है। * गणितीय अंकों एवं अक्षरों में संगति स्थापित करने की ओर अग्रसर होता है। * शब्द संपदा में वृद्‌धि होती हैं। * नए शब्दों का दैनिक जीवन में प्रयोग करता है।	* प्रात्यक्षिक * कृति * निरीक्षण * कक्षा कार्य * सहपाठी मूल्यांकन * सहपुस्तक कसौटी

विषय : हिंदी (प्रथम भाषा) पाठ्यक्रम

भाषाई कौशल/क्षेत्र – व्यावहारिक सृजन **कक्षा : पहली**

अ. क्र.	अध्ययन अनुभव	अध्ययन–अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
	भाषाई खेल – 'काम को नाम' कृति – कक्षा के अलग–अलग विद्यार्थियों द्वारा खाने, सोने, पढ़ने, नहाने की कृति करना। अन्य विद्यार्थियों द्वारा काम को उचित नाम देना।		* खेल में रुचि, सहभाग लेता है। * निर्णयक्षमता का विकास। * स्त्री–पुरुष समानता की भावना का विकास। * भावनाओं का समायोजन	* निरीक्षण * कृति * प्रात्यक्षिक
१	**अभिनय** – * माँ द्वारा शिशु को खाना खिलाने का अभिनय करना। * माँ की शिशु के प्रति अन्य कृतियों का अभिनय करना। * विद्यार्थी द्वारा विद्यालय में आने हेतु तैयार होने का अभिनय करना।	* चित्र चार्ट	* माँ द्वारा शिशु को खाना खिलाने की नकल अभिनय करता है। * माँ द्वारा विद्यार्थी के दैनिक जीवन में की जानेवाली कृतियों का अभिनय करता है। * विद्यालय में आने से पूर्व की जानेवाले कृतियों का अभिनय करता है। करती है। * अच्छी बातों की नकल करने की वृत्ति बढ़ती है। * मन में माता–पिता, बड़ों के प्रति आत्मीयता, प्रेम, आदरभाव का विकास होता है।	* प्रात्यक्षिक * निरीक्षण * कक्षाकार्य * सहपाठी मूल्यांकन * कृति
२	व्यावसायिक संभाषण – * परिसर के परिचित दूधवाले, सब्जीवाले, खिलौने–वाले के साथ भाषण–संभाषण करना, बातचीत करना।	* व्यावसायिकों के चित्र एवं चार्ट	* परिसर के परिचित व्यावसायियों से बातचीत करता है। * व्यावसायियों से व्यवसाय के बारे में जानकारी प्राप्त करता है।	* प्रात्यक्षिक * मौखिक कृति

अ. क्र.	अध्ययन अनुभव	अध्ययन-अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
			* परिचित व्यवसायियों की व्यावसायिक बातचीत के तरीके से परिचित होने का प्रयास करता है। * मन में परिसर के सभी व्यवसायियों के प्रति आत्मीयता और आदरभाव पैदा होता है। * परिसर के व्यवसायियों का अभिनय करने का प्रयास करता है।	* निरीक्षण * कक्षाकार्य
३	कला – * मणि, बीज, पेंसिल की छीलन आदि से विभिन्न परिचित आकृतियाँ बनाना। (गोलाकार, चिड़ियाँ, मछली आदि) * मणि, बीज, पेन्सिल की छीलन आदि से वर्णों की आकृतियाँ बनाना।	* मणि, बीज, पेन्सिल की छीलन, आकृतियों का चार्ट एवं कार्ड, वर्णों के कार्ड एवं चार्ट, संदर्भ साहित्य	* रुचि लेते हुए मणि, बीज, पेंसिल की छीलन आदि से विभिन्न परिचित आकृतियाँ बनाता है। * कलात्मक दृष्टिकोण जागृत होता हैं एवं कलात्मक सौंदर्य की ओर आकर्षित होता है। * अनुपयोगी वस्तुओं से नई वस्तुएँ बनाने की वृत्ति बढ़ती है। * मणि, बीज, छीलन आदि से वर्णों की आकृतियाँ बनाता है। * सजावट करने की वृत्ति जागृत होती है। * स्वच्छ एवं साफ-सुथरा रहने की आदत बनती है।	* प्रात्यक्षिक * कृति * निरीक्षण * कक्षाकार्य * सहपाठी मूल्यांकन * स्वाध्याय * उपक्रम

अ. क्र.	अध्ययन अनुभव	अध्ययन-अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
४	रूपांतरण - * पारिवारिक संबंधों के लिए बोलियों में प्रयुक्त शब्दों का मानक हिंदी में रूपांतरण करना। (उदा. आई, अम्मा, माई - माँ आदि)	* बोली एवं खड़ीबोली के शब्दों का चार्ट	* बोलियों एवं मातृभाषा में बोले जानेवाले शब्दों से परिचित होता है। * बोली भाषा एवं खड़ीबोली के शब्दों कें समानता एवं अर्थभिन्नता से परिचित होने का प्रयत्न करता है। * अपनी बोली भाषा के प्रति सम्मान की भावना जागृत होती है। * हिंदी खड़ीबोली के मानक शब्दों से अवगत होने की ओर अग्रसर होता है। * शब्द भंडार में वृद्धि होती है।	* प्रात्यक्षिक * निरीक्षण * कक्षाकार्य * मौखिक एवं लिखित कृति * स्वाध्याय
५	सांकेतिक चिह्न - * शिरोरेखा - क * पूर्णविराम - । * गणितीय चिह्न - +, =	* कार्ड, चार्ट	* विद्यार्थी शिरोरेखा एवं पूर्णविराम से अवगत होता है। * लेखन में शिरोरेखा एवं पूर्णविराम का उचित प्रयोग करना सीखता है। * (धन)+, (ऋण)- एवं (बराबर) = के चिह्नों से परिचित होता है। * सांकेतिक चिह्नों का रेखन एवं लेखन करता है। * सांकेतिक चिह्नों का अर्थ समझते हुए व्यावहारिक जीवन में यथायोग्य उपयोग करता है।	* प्रात्यक्षिक * कृति * निरीक्षण * कक्षाकार्य * सहपाठी मूल्यांकन

विषय : हिंदी (प्रथम भाषा) पाठ्यक्रम

भाषाई कौशल/क्षेत्र : श्रवण **कक्षा – दूसरी**

अ. क्र.	अध्ययन अनुभव	अध्ययन-अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
	भाषाई खेल : 'बूझो तो जाने' विद्यार्थियों को अकार, आकार, इकार, ईकार, उकार, ऊकार से बने शब्दों को सुनाना और ह्रस्व एवं दीर्घ ध्वनियों को पहचानने के लिए बोलना/कहना।	* सी.डी., डी.वी.डी., * ध्वनिफीत * शब्दकार्ड आदि।	* अकार, उकार आदि मात्राओं से बने शब्दों को ध्यानपूर्वक सुनता है। * ह्रस्व एवं दीर्घ ध्वनियों को पहचानता है। * ह्रस्व एवं दीर्घ ध्वनि के अंतर को समझता है। * ह्रस्व एवं दीर्घ मात्राओं से बने शब्दों को अलग करने की क्षमता विकसित होती है। * ध्यानपूर्वक सुनने का रुझान बढ़ता है। * वर्गीकरण एवं निर्णयक्षमता का विकास	* प्रात्यक्षिक * निरीक्षण * कक्षाकार्य * सहपाठी मूल्यांकन
१.	अपरिचित अभिनय गीत, बंधुभाव, अनुशासन, राष्ट्रीय पर्व संबंधी बालगीत सुनना-सुनाना।	* बालगीत चार्ट * अभिनय गीत, चार्ट * प्रसंग चित्र चार्ट * सी.डी. * डी.वी.डी. * ध्वनिफीत * संदर्भ साहित्य	* अपरिचित अभिनय गीत, बालगीत रुचिपूर्वक सुनता है। * रोचक अभिनय गीत, बालगीत के माधुर्य को श्रवण के माध्यम से अनुभव करता है। * भावनाओं का समायोजन होता है। * सुने हुए बालगीत एवं विशिष्ट प्रसंगों को दोहराता है। * बंधुता, अनुशासन की भावना का विकास	* प्रात्यक्षिक * निरीक्षण * कक्षाकार्य
२.	समय का महत्त्व, स्वावलंबन आदि से संबंधित बोधकथा, विशिष्ट प्रसंग सुनना-सुनाना।	* बोधकथा चार्ट * संदर्भ साहित्य * सी.डी. * डी.वी.डी. * ध्वनिफीत	* बोधकथा सुनने में रुचि लेता है। * बोधकथा के पात्रों से सम अनुभूति की भावना जागृत होती है। * स्वावलंबन आदि मूल्यों का महत्व समझता है।	* प्रात्यक्षिक * मौखिक * निरीक्षण * कक्षाकार्य * सहपाठी मूल्यांकन

अ. क्र.	अध्ययन अनुभव	अध्ययन-अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
			* विशिष्ट रोचक प्रसंगों का वर्णन ध्यानपूर्वक सुनता है। * भावना एवं तनाव का समायोजन होता है। * सुनी हुई बोधकथा को दोहराता है। * अपने जीवन में मूल्यों को उतारने का प्रयास करता है।	
३.	प्रकृति, देशप्रेम, सर्वधर्म समभाव संबंधी बालकथा, बालकविता समझते हुए सुनना एवं तद्नुरूप कृति करना।	* संदर्भ साहित्य, * बालकविता, बालकथा * सी.डी. * डी.वी.डी. * ध्वनिफीत	* बालकथा, बालकविता सुनने में रुचि लेता है। * बालकथा, बालकविता ध्यानपूर्वक समझते हुए सुनता है। * बालकथा, बालकविता में समाहित भाव के अनुरूप कृति करता है। * हावभाव, अभिनय के साथ सुने हुए गीत एवं कविता को दोहराता है। * प्रकृति, देशप्रेम बंधुभाव की भावना बढ़ती है। * ध्यानपूर्वक सुनने की प्रवृत्ति जागृत होती है। * बालकथा के मूल्यों को अपने जीवन में उतारने का प्रयास करता है।	* प्रात्यक्षिक * निरीक्षण * कक्षाकार्य * सहपाठी मूल्यांकन
४.	आदेश, अनुरोध, निर्देश के वाक्य सुनते हुए उसका आशय समझता है एवं तदनुसार कृति करना।	* संबंधित चार्ट, * वाक्यपट्टी * सी.डी. * डी.वी.डी.	* आदेश, निर्देश, अनुरोध आदि के वाक्य ध्यानपूर्वक सुनता है। * आदेश, निर्देश, अनुरोध के वाक्यों का आशय समझता है। तदनुरुप कृति करता है।	* मौखिक * कृति * प्रात्यक्षिक * निरीक्षण

अ. क्र.	अध्ययन अनुभव	अध्ययन-अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
		* ध्वनिफीत * संदर्भ साहित्य	* अनुशासन, विनम्रता आदि गुणों का विकास होता है। * उपरोक्त गुणों को अपने जीवन में उतारने का प्रयास करता है। * बड़ों के प्रति आदरभाव विकसित होता है।	* कक्षाकार्य * सहपाठी मूल्यांकन
५.	आवाज सुनकर यातायात के साधन पहचानना। इसमें आए हुए वर्णों को पहचानना।	* यातायात के साधनों के चार्ट। * सी.डी., डी.वी.डी. * ध्वनिफीत	* यातायात के विभिन्न साधनों की आवाज/ध्वनियों को ध्यानपूर्वक सुनता है। * यातायात के साधन व उससे संबंधित आवाज/ध्वनि में संगति बिठाता है। * ध्वनि/आवाज सुनकर साधनों को पहचानता है। * ध्वनि/आवाज में आए वर्णों को ध्यानपूर्वक सुनता है। * एकाग्रचित्त होकर सुनने की प्रवृत्ति जागृत होती है। * प्रिय एवं अप्रिय ध्वनियों में अंतर करता है।	* प्रात्यक्षिक * निरीक्षण * कक्षाकार्य * सहपाठी मूल्यांकन
६.	वर्णों, (विशेष वर्ण, अनुनासिक, अनुस्वार, विसर्ग, संयुक्ताक्षर) का श्रवण के माध्यम से पुनरावर्तन करना। बारहखडी का शुद्ध उच्चारण सुनना। सुनाना।	* वर्ण कार्ड, * वर्ण चार्ट, * अंक कार्ड, * बारहखडी चार्ट। * सी.डी., डी.वी.डी. * ध्वनिफीत।	* वर्ण, विशेष वर्ण, अनुनासिक, अनुस्वार, विसर्ग, संयुक्ताक्षर को ध्यानपूर्वक सुनता है। * व्यावहारिक जीवन में वर्णों एवं मात्राओं का प्रयोग करता है। * वर्णों और मात्राओं के वर्गीकरण की क्षमता (अलग करना) विकसित होती है।	* मौखिक * प्रात्यक्षिक * निरीक्षण * कक्षाकार्य * सहपाठी मूल्यांकन

विषय : हिंदी (प्रथम भाषा) पाठ्यक्रम

भाषाई कौशल/क्षेत्र : भाषण – संभाषण **कक्षा – दूसरी**

अ. क्र.	अध्ययन अनुभव	अध्ययन-अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
	भाषाई खेल : ''मैं हूँ-----।'' **कृति :** फल, फूल, प्राणी, वस्तु, पक्षी आदि का चित्र लेकर एक-एक विद्यार्थी द्वारा वाक्य श्रृंखला बढ़ाना। उदा. ☐ तोते का चित्र लेकर उसके संबंध में विद्यार्थियों से एक-एक वाक्य कहलाना।	* चित्र * चार्ट * फोल्डर * प्रक्षेपक * संदर्भ साहित्य	* आनंदपूर्वक खेल में रुचि लेता है। * चित्र देखकर प्रत्येक विद्यार्थी एक-एक वाक्य बताता है। * चित्र से संबंधित शब्दों का प्रयोग अपने वाक्य में करता है। * आपस में चर्चा करता है। * भाषण-संभाषण में बिना झिझक सहभागी होता है। * आत्मविश्वास में वृद्धि होती है।	* निरीक्षण * प्रात्यक्षिक * मौखिक * कक्षाकार्य * सहपाठी मूल्यांकन
१.	* अपरिचित बालगीत, अभिनयगीत, कविता प्रस्तुत करना। (हावभाव, लय, ताल, गति के साथ प्रस्तुति)	* संदर्भ साहित्य/सामग्री * बालगीत चार्ट * सी.डी. * डी.वी.डी.	* अपरिचित बालगीत, अभिनयगीत को समझते हुए हावभाव, लय, ताल, गति के साथ प्रस्तुत करता है। * भावना एवं तनाव का समायोजन होता है।	
२.	* बोधकथा, प्रसंग, घटना सुनाकर उनपर पूछे गए प्रश्नों के (सरल एवं छोटे) उत्तर देना। घर-परिवार का परिचय देना।	* सी.डी. * संदर्भ साहित्य * बोधकथा चार्ट * चित्र चार्ट * फोल्डर	* बोधकथा, प्रसंग एवं घटना ध्यानपूर्वक सुनता है। * बोधकथा के आशय को समझता है। * आशय पर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर देता है। * बोधकथा के पात्रों के साथ सम अनुभूति निर्माण होती है। * कथा के मूल्यों को जीवन में उतारने का प्रयास करता है।	* मौखिक * निरीक्षण * कक्षाकार्य * सहपाठी मूल्यांकन

अ. क्र.	अध्ययन अनुभव	अध्ययन–अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
			* घर–परिवार के सदस्यों का परिचय देता है। * घर–परिवार के सदस्यों के प्रति आत्मीयता निर्माण होती है। * छोटे परिवार से प्राप्त सुविधाओं से परिचित होता है।	
३.	* गीत, कविता, पहेली पर आधारित प्रश्नों के उत्तर देना।	* संदर्भ साहित्य * सी.डी. * डी.वी.डी. * रेडियो * ध्वनिफीत * बालगीतों के चार्ट * पहेली के चार्ट	* गीत, कविता, पहेली को ध्यानपूर्वक सुनते हुए समझता है। * गीत, कविता का आशय समझता है। * आशय पर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर देता है। उत्साहपूर्वक छोटे – छोटे प्रश्नों के उत्तर देता है। * गीत /कविता से प्राप्त मूल्य जीवन में उतारने के प्रति उन्मुख होता है।	* मौखिक * निरीक्षण * कक्षाकार्य * सहपाठी मूल्यांकन
४.	* परिवेश के सार्वजनिक स्थल पर सुने/पढ़े अनुरोध, आदेश, निर्देश सूचना आदि का आशय बताना।	* चित्र चार्ट * सूचना चार्ट * आदेश, निर्देश चार्ट	* परिवेश के सार्वजनिक स्थलों पर पढ़े/सुने हुए अनुरोध, आदेश, निर्देश, सूचना आदि का आशय समझते हुए बताता है। * सूचना, आदेश, अनुरोध आदि का पालन करते हुए तदनुरूप कृति करता है। * दैनिक जीवन में अनुशासन का महत्त्व समझता है। * सार्वजनिक संपत्ति के संरक्षण की भावना जागृत होती है। * उपरोक्त संदर्भ में पूछे गए प्रश्नों के उत्तर देता है।	* निरीक्षण * प्रात्यक्षिक * कक्षाकार्य

अ. क्र.	अध्ययन अनुभव	अध्ययन-अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
५.	* अपने गाँव/शहर के बारे में बताता है।	* चित्र चार्ट * संदर्भ साहित्य	* गाँव/शहर की जानकारी अपने शब्दों में बताता है। * भाषण-संभाषण में आत्मविश्वास * गाँव/शहर के प्रति आत्मीयता * गाँव/शहर के स्थलों के संरक्षण की भावना।	* निरीक्षण * प्रात्यक्षिक * सहपाठी मूल्यांकन * कक्षा कार्य

विषय : हिंदी (प्रथम भाषा) पाठ्यक्रम

भाषाई कौशल/क्षेत्र – वाचन **कक्षा : दूसरी**

अ. क्र.	अध्ययन अनुभव	अध्ययन–अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
	भाषाई खेल – 'मेल मिलाप' कृति : अलग–अलग विद्यार्थियों के गले में चित्र कार्ड एवं संबंधित शब्द–कार्ड लटकाकर चित्रों और शब्दों की संगति मिलाकर वाचन करना।	* चित्र कार्ड * शब्द कार्ड	* खेल के माध्यम से चित्र और शब्द की संगति मिलाकर शब्दों का वाचन करता है। * वर्ण–पहचान का दृढ़ीकरण होता है। परिवेशगत साइन बोर्ड पढ़ता है।	* निरीक्षण * प्रात्यक्षिक * सहपाठी मूल्यांकन * कक्षाकार्य
१.	अनुवाचन – * लयात्मक वाक्य एवं बालगीत का वाचन करना।	* वाक्य पट्टी * बालगीत चार्ट	* एकाग्रचित्त होकर लयात्मक वाक्य एवं बालगीत का वाचन करता है। * वाक्य एवं बालगीत में आए वर्णों एवं शब्दों के सही उच्चारण से अवगत होता है। * तनाव का समायोजन होता है। * वाचन के प्रति रुचि जागृत होती है।	* मौखिक * निरीक्षण * कक्षाकार्य * सहपाठी मूल्यांकन
२.	मुखर वाचन : * बारहखड़ी का वाचन करना। (पुनरावृत्ति) * मात्रा रहित, मात्रा सहित, संयुक्ताक्षर– युक्त शब्द एवं घोष वाक्य का मुखर वाचन करना।	* शब्द चार्ट, घोष वाक्य, पट्टियाँ, बारहखड़ी चार्ट, संदर्भ साहित्य	* मात्रा रहित, मात्रा सहित, संयुक्ताक्षर शब्द एवं घोष वाक्य का मुखर वाचन करता है। * मात्रा रहित–सहित शब्दों को अलग करता है। * उपरोक्त शब्दों का मानक उच्चारण करता है।	* मौखिक * प्रात्यक्षिक * निरीक्षण * कक्षाकार्य * सहपाठी मूल्यांकन

अ. क्र.	अध्ययन अनुभव	अध्ययन-अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
३.	* विराम चिह्नों सहित वाक्यों, चित्रकथा का वाचन करना।	* विराम चिह्न चार्ट * वाक्य पट्टियाँ * चित्र कथा चार्ट * संदर्भ साहित्य	* वाचन करते समय विराम चिह्नों को समझते हुए वाचन करता है। * चित्रकथा का विराम चिह्नों के अनुसार हावभावयुक्त वाचन करता है। * वाचन में विराम चिह्नों की उपयोगिता समझने की ओर उन्मुख होता है।	* मौखिक * प्रात्यक्षिक * निरीक्षण * कक्षाकार्य * सहपाठी मूल्यांकन * स्वाध्याय
४.	* संस्कार गीत, कथा का वाचन करना। * शब्दयुग्मयुक्त परिच्छेद का वाचन करना।	* संदर्भ साहित्य * संस्कार गीत चार्ट * संस्कार कथा चार्ट * शब्दयुग्मयुक्त परिच्छेद	* रुचि लेते हुए संस्कार गीत, कथा का वाचन करता है। * शब्दयुग्मयुक्त परिच्छेद का वाचन करता है। * संस्कार गीत एवं कथा का विषय एवं मुख्य विचार समझता है। * उपरोक्त विचारों का महत्त्व समझते हुए उन्हें जीवन में उतारने की ओर उन्मुख होता है। * दैनिक संभाषण में शब्दयुग्मों का प्रयोग करता है। * बिना रुके स्पष्ट एवं मानक उच्चारण करते हुए वाचन करता है।	* प्रात्यक्षिक * निरीक्षण * कक्षाकार्य * सहपाठी मूल्यांकन * स्वाध्याय

अ. क्र.	अध्ययन अनुभव	अध्ययन–अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
५.	✻ परिवार, विद्यालय, खेल आदि पर लिखी जानकारी का वाचन करना।	✻ चार्ट	✻ विद्यार्थी, विद्यालय, खेल आदि के संदर्भ में लिखी जानकारी का रुचिपूर्वक वाचन करता है। ✻ विद्यालय के प्रति आत्मीयता एवं लगाव की भावना जागृत होती है। ✻ गुरुजनों के प्रति आत्मीयता एवं आदरभाव विकसित होता है। ✻ शुद्ध, स्पष्ट एवं सहज उच्चारणयुक्त वाचन की ओर प्रवृत्त होता है।	✻ प्रात्यक्षिक ✻ दैनंदिन निरीक्षण ✻ कक्षाकार्य ✻ सहपाठी मूल्यांकन ✻ स्वाध्याय

पाठ्यक्रम : हिंदी (प्रथम भाषा)

भाषाई कौशल/क्षेत्र – लेखन **कक्षा – दूसरी**

अ. क्र.	अध्ययन अनुभव	अध्ययन–अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
	भाषाई खेल – आकृति की पहचान विद्यार्थी द्वारा एक दूसरे की पीठ पर या हवा में उँगली से वर्ण की आकृति बनाना एवं पहचानना।		* रुचि लेते हुए विद्यार्थी एक दूसरे की पीठ पर उँगली से वर्ण की आकृति बनाकर पहचानता है। * वर्णों के आकार पहचानकर लेखन की ओर प्रवृत्त होता है।	* प्रात्यक्षिक * निरीक्षण * कक्षाकार्य * सहपाठी मूल्यांकन
१.	अनुलेखन : शब्दों का अनुलेखन करना।	शब्द कार्ड, शब्द चार्ट	* दिए गए शब्दों का अनुलेखन करता है। * शब्दों में आए वर्णों के आकार–प्रकार का दृढीकरण। * अनुलेखन के प्रति रुझान बढ़ता है।	* कृति * प्रात्यक्षिक * निरीक्षण * कक्षाकार्य * सहपाठी मूल्यांकन
२.	सुलेखन : वाक्य, शब्दसमूह का लेखन करना।	वाक्य–पट्टी, सुवचन, घोषवाक्य, शब्दसमूह,	* शब्द–समूह एवं वाक्यों का सुलेखन करने में रुचि लेता है। * सुलेखन करते समय शब्दों, वाक्यों में आए वर्णों के आकार–प्रकार का दृढीकरण सावधानी से सुपाठ्य, सुडौल, शुद्ध सुलेखन की ओर अग्रसर होता है। * सुलेखन प्रतियोगिता में सहभागी होता है। * 'स्व' की पहचान	* प्रात्यक्षिक * निरीक्षण * कक्षाकार्य * सहपाठी मूल्यांकन * स्वाध्याय * उपक्रम

अ. क्र.	अध्ययन अनुभव	अध्ययन–अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
३.	**श्रुत लेखन – शुद्ध लेखन** शब्द, संयुक्ताक्षरयुक्त शब्द, वाक्य का श्रुत लेखन एवं शुद्ध लेखन करना।	शब्द कार्ड, संयुक्ताक्षरयुक्त शब्द कार्ड, वाक्य पट्टी सुचवन पट्टी	* शब्द, संयुक्ताक्षरयुक्त शब्द एवं वाक्य का ध्यानपूर्वक श्रुत लेखन करता है। * शब्द एवं वाक्यों के शुद्ध लेखन में अभिरुचि बढ़ती है। * निर्णय क्षमता का विकास होता है। * लेखन में शुद्धता लाने का प्रयास करता है। * श्रुत लेखन प्रतियोगिता में सहभागी होता है। * दैनिक कार्यों में सफाई रखने के प्रति उन्मुख होता है।	* प्रात्यक्षिक * निरीक्षण * कक्षाकार्य * स्वाध्याय * सहपाठी मूल्यांकन * सहपुस्तक कसौटी
४.	**प्रश्नोत्तर लेखन –** प्रश्नों का एक शब्द, एक वाक्य में उत्तर लिखना। (वस्तुनिष्ठ)	संदर्भ साहित्य – छोटे गद्य परिच्छेद, प्रश्नसंच	* पढ़े गए छोटे–छोटे प्रश्नों को ध्यानपूर्वक सुनकर समझता है। * पूछे गए प्रश्नों का एक शब्द या एक वाक्य में उत्तर लिखता है। * आकलन करने की प्रवृत्ति विकसित होती है। * दैनिक जीवन में सटीक उत्तर देने की ओर प्रवृत्त होता है।	* प्रत्यक्षिक * निरीक्षण * कक्षाकार्य * स्वाध्याय * सहपाठी मूल्यांकन * सहपुस्तक कसौटी
५.	**स्वयंप्रेरित लेखन –** * चित्र के आधार पर वर्णन लिखना। १ से ५० तक के अंकों का अक्षरों में लेखन करना।	* चित्र कार्ड * चित्र चार्ट * अक्षरों में लिखे अंक कार्ड * अक्षरों में लिखे अंकों के चार्ट	* चित्र के आधार पर स्वयंप्रेरित लेखन हेतु प्रवृत्त होता है। * चित्र के माध्यम से आकलन क्षमता बढ़ती है। * दिए गए चित्र के आधार पर चित्र का वर्णन ४ ते ५ वाक्यों में करता है। * स्पष्ट, सुडौल, सुपाठ्य लेखन की ओर अग्रसर होता है। * अंक और अक्षरों में लिखित अंकों के बीच संगति बिठाता है। अंकों को अक्षरों में लिखता है।	* प्रात्यक्षिक * निरीक्षण * कक्षाकार्य * स्वाध्याय * सहपाठी मूल्यांकन

विषय : हिंदी (प्रथम भाषा) पाठ्यक्रम

भाषाई कौशल/क्षेत्र – व्यावहारिक सृजन **कक्षा : दूसरी**

अ. क्र.	अध्ययन अनुभव	अध्ययन–अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
	भाषाई खेल – अलग–अलग विद्यार्थियों द्वारा परिसर के परिचित व्यवसायियों की नकल करना। अन्य विद्यार्थियों द्वारा उनके नाम बताना। उदा. डाक्टर, किसान, अध्यापक आदि।	* व्यवसायियों के चित्र कार्ड	* ध्यान से व्यवसायी की कृति को देखकर उसका आकलन करता है। * व्यवसायियों को पहचानता है। * परिसर के व्यवसायियों के प्रति आत्मीयता बढ़ती है। * सहजता से नकल करने का प्रयास करता है।	* प्रात्यक्षिक कृति * निरीक्षण * कक्षाकार्य * सहपाठी मूल्यांकन
१.	अभिनय : * परिचित खेल खेलने का एकल एवं सामूहिक अभिनय करना। * फैंसी ड्रेस प्रतियोगिता में सहभागी होकर विषयानुसार अभिनय करना।	* खेलों के चित्र कार्ड, चित्र चार्ट * संदर्भ साहित्य	* खेल अभिनय में रुचि। * सूचनानुसार अभिनय। * परिसर के यातायात के साधनों की ध्वनियों की नकल करता है। * खेलों के प्रति रुचि। * एकल एवं सामूहिक अभिनय करता है। * फैंसी ड्रेस प्रतियोगिता में सहभागी होता है। * फैंसी ड्रेस तथा संदर्भ के अनुसार अभिनय करता है। * अच्छी बातों का अनुकरण करने की प्रवृत्ति विकसित होती है। * अपने कलागुणों को प्रकट करने के अवसर का लाभ उठाता है। * मिलकर काम करने की प्रवृत्ति।	* कृति * निरीक्षण * कक्षाकार्य * सहपाठी मूल्यांकन * स्वाध्याय

अ. क्र.	अध्ययन अनुभव	अध्ययन–अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
२.	व्यावसायिक संभाषण – स्टेशनरी विक्रेता के साथ संभाषण की नकल	* स्टेशनरी की सूची का चार्ट * स्टेशनरी दूकान एवं विक्रेता का चित्र चार्ट	* अध्ययन हेतु उपयुक्त स्टेशनरी से परिचित होता है। * स्टेशनरी विक्रेता और ग्राहक के बीच होनेवाली बातों की नकल करने का प्रयास करता है। * दूकानदार के पास जाकर दैनिक जीवन में आवश्यक वस्तुएँ खरीदता है। * आत्मविश्वास जागृत होता है।	* कृति * प्रात्यक्षिक * कक्षाकार्य * निरीक्षण * सहपाठी मूल्यांकन * स्वाध्याय
३.	कला – विभिन्न प्रकार की मिट्टी से वर्णों की आकृतियाँ बनाना। मिट्टी से मात्रा रहित शब्द बनाना।	* अलग–अलग प्रकार की मिट्टी वर्ण कार्ड, चार्ट, मात्रा रहित वर्ण कार्ड, चार्ट * गीली मिट्टी * वैक्स क्ले	* विभिन्न प्रकार की मिट्टी से वर्णों की आकृतियाँ बनाने में रुचि लेता है। * मिट्टी से मात्रा रहित शब्दों की आकृतियाँ बनाता हैं। * उँगलियों को मिट्टी से आकृति बनाने की आदत हो जाती है। * अपनी पसंद की कला को अन्य विद्‌यार्थियों के सामने प्रस्तुत करता है।	* कृति * प्रात्यक्षिक * कक्षाकार्य * निरीक्षण * सहपाठी मूल्यांकन * स्वाध्याय
४.	रूपांतरण – परिवार के दैनिक उपयोग की चीजों के लिए बोलियों में प्रयुक्त शब्दों का मानक हिंदी में रूपांतरण उदा. गहू – गेहूँ, साबण – साबुन, चाउर – चावल, कुदार – कुदाल, खटिया– खाट आदि।	* बोलियों में प्रयुक्त वस्तुओं के नाम के कार्ड * चार्ट * उन नामों के शब्द चार्ट	* घर में दैनिक उपयोग की चीजों के बोली भाषा के नामों से परिचित होता है। * बोली भाषा के शब्दों के मानक रूप समझता है। * हिंदी में मानक शब्दों से परिचित होता है। * शब्द संपदा में वृद्‌धि होती है।	* प्रात्यक्षिक * कक्षाकार्य * निरीक्षण * सहपाठी मूल्यांकन

अ. क्र.	अध्ययन अनुभव	अध्ययन–अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
५.	सांकेतिक चिह्न – * यातायात के चिह्नों का रेखन–लेखन (सिग्नल के तीन रंग, झेब्रा क्रासिंग आदि।		* यातायात के चिह्नों से परिचित होता है। * यातायात में लाल, पीले, हरे रंग, जेब्रा क्रासिंग आदि के अर्थ को समझता है। * दैनिक जीवन में यातायात के नियमों का पालन करता है। * जीवन में अनुशासन की ओर उन्मुख होता है।	* प्रात्यक्षिक * कक्षाकार्य * निरीक्षण * सहपाठी मूल्यांकन * स्वाध्याय

विषय : हिंदी (प्रथम भाषा) पाठ्यक्रम

भाषाई कौशल/क्षेत्र : श्रवण **कक्षा – तीसरी**

अ. क्र.	अध्ययन अनुभव	अध्ययन–अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
	भाषाई खेल : 'बूझो तो जानें' **कृति** : किसी त्योहार की विशेषताओं को दर्शाने वाली शब्द–शृंखला का नाम लेना। विद्‌यार्थी शब्दों को सुनकर–त्योहार का नाम पहचाने। उदा. दीया, तेल, उबटन, रंगोली, तोरण, घर की सफाई आदि। (दीपावली) * रोजा, ईफ्तार, नमाज, मीठी सेवईं (ईद) * सांताक्लाज, भेंट, उपहार, क्रिसमस ट्री (नाताल)	–	* शब्दों को ध्यानपूर्वक सुनकर त्योहारों के नाम पहचानता है। * भाषिक खेल में रुचि लेता है। * एकाग्रता से सुनने की ओर उन्मुख होता है। * शब्दभंडार में वृद्‌धि होती है। * सांस्कृतिक विरासत के प्रति गौरव की भावना जागृत होती है। * सर्वधर्म समभाव का पोषण होता है। * राष्ट्रीय एकात्मता की भावना पुष्ट होती है।	* प्रात्यक्षिक * निरीक्षण * कक्षा कार्य * सहपाठी मूल्यांकन
१.	समूहगीत, अभिनय गीत, सुनना–सुनाना।	* संदर्भ साहित्य, चार्ट * सी.डी, डी.वी.डी. * ध्वनिफीत	* समूहगीत, अभिनय गीत, ध्यानपूर्वक सुनता है। * रुचिपूर्वक सुनने में आनंद लेता है। * सुनकर दूसरे विद्‌यार्थियों को हाव–भाव, लय–ताल के साथ सुनाता है। * भावनाओं तथा तनाव का समायोजन होता है।	* मौखिक * प्रात्यक्षिक * निरीक्षण * कक्षाकार्य
२.	नैतिक मूल्यों पर आधारित कथाएँ सुनना–सुनाना। परिसर की नदी, तालाब, उद्‌यान की जानकारी सुनना– सुनाना।	* संदर्भ साहित्य चार्ट * सी.डी, डी.वी.डी. * ध्वनिफीत	* कथाएँ आनंदपूर्वक सुनता है। * जानकारी रुचिपूर्वक सुनता है। * कथाओं में निहित मूल्यों से अवगत होता है। उन्हें अपने जीवन में उतारने का प्रयास करता है।	* प्रात्यक्षिक * मौखिक * निरीक्षण * कक्षाकार्य

अ. क्र.	अध्ययन अनुभव	अध्ययन-अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
			* कथाओं में सुने हुए शब्दों को अन्य विद्यार्थियों को सुनाता है। * भावनाओं का समायोजन होता है। * कथा के पात्रों से सहसंबंध प्रस्थापित करता है। * परिसर के बारे में जानकारी प्राप्त करता है। * विद्यालय तथा विद्यालय की वस्तुओं के प्रति आत्मीयता विकसित होती है।	* सहपाठी मूल्यांकन
३.	कविता, संवाद समझते हुए सुनना एवं तदनुसार कृति करना।	* संदर्भ साहित्य, * चार्ट * सी.डी, डी.वी.डी., * ध्वनिफीत	* कविता, संवाद ध्यानपूर्वक सुनता है। * सुनी हुई कविता, संवाद का अर्थ समझता है। * कविता, संवाद में आए भाव के अनुसार कृति करता है। * भावनाओं का समायोजन होता है। * भाव, विचार एवं कृति में संगति बिठाने का प्रयास करता है।	* प्रात्यक्षिक * निरीक्षण * कक्षाकार्य
४.	कृतियुक्त परिच्छेद सुनकर उसमें दिए गए आदेश, सूचना के अनुसार कृति करना।	* चित्र * चार्ट * सी.डी., डी.वी.डी * ध्वनिफीत * संदर्भ साहित्य	* कृतियुक्त परिच्छेद में आए हुए आदेश, सूचना को ध्यानपूर्वक सुनता है। * सुने हुए आदेशों तथा सूचनाओं को समझता है। * दिए गए मौखिक आदेश के अनुसार कृति करता है।	* प्रात्यक्षिक * निरीक्षण * कक्षाकार्य * सहपाठी मूल्यांकन

अ. क्र.	अध्ययन अनुभव	अध्ययन-अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
			* जीवन में आज्ञा पालन, विनम्रता, अनुशासन इन गुणों का विकास होता है।	* सहपाठी मूल्यांकन
५.	गद्यांश, पद्यांश सुनकर उनपर पूछे गए वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के उत्तर देना।	* चार्ट * सी.डी., डी.व्ही.डी * ध्वनिफीत * संदर्भ साहित्य	* गद्यांश, पाठ्यांश को ध्यानपूर्वक सुनता है। * प्रश्नों के वस्तुनिष्ठ उत्तर देता है।	* निरीक्षण * प्रात्यक्षिक * कक्षाकार्य *सहपाठी मूल्यांकन

विषय : हिंदी (प्रथम भाषा) पाठ्यक्रम

भाषाई कौशल/क्षेत्र : भाषण-संभाषण **कक्षा - तीसरी**

अ. क्र.	अध्ययन अनुभव	अध्ययन-अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
	भाषाई खेल : 'मैं कौन हूँ?' (आत्मकथनात्मक परिचय) **कृति** : विद्यार्थी को चित्र दिखाना। विद्यार्थी चित्र देखकर वर्णन करेगा। एक-एक विद्यार्थी द्वारा वाक्य शृंखला बनाना। उदा. आम का पेड़ वाक्य शृंखला : ''मैं आम का पेड़ हूँ। मैं सबको छाया देता हूँ। मेरे पत्ते हरे-हरे होते हैं।'' आदि-आदि। इस प्रकार पशु, पक्षी, वृक्ष, वस्तु का आत्मकथनात्मक परिचय देते हुए वाक्य शृंखला बढ़ाते हुए बोलना।	* आम्रवृक्ष का चित्र, अन्य पेड़, पशु, पक्षी, वस्तू आदि के चित्र, चित्रचार्ट	* विद्यार्थी चित्र के निर्धारित विषय पर आपस में चर्चा करता है। * उपरोक्त विषय पर क्रमशः बोलता है। * भाषण-संभाषण में क्रमबद्धता आती है। * बातचीत करने में रुचि लेता है। * अन्य विद्यार्थी द्वारा बोले गए शब्द, वाक्यों को दोहराता है।	* प्रात्यक्षिक * निरीक्षण * कक्षाकार्य
१	* अभिनय गीत, संस्कारगीत, कविता आदि की क्रम से सस्वर एवं हावभावयुक्त प्रस्तुति करना।	* संदर्भ साहित्य * सी.डी, डी.वी.डी. * ध्वनिफीत	* अभिनयगीत, संस्कारगीत, कविता आदि की सहज प्रस्तुति करता है। * कविता, बालगीत, अभिनय गीत में आए भाव, विचार को समझता है। * भाव, विचार एवं उससे संबंधित कृति में संगति बिठाता है।	* प्रात्यक्षिक * निरीक्षण * कक्षाकार्य * सहपाठी मूल्यांकन

अ. क्र.	अध्ययन अनुभव	अध्ययन–अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
			* उपरोक्त की हावभाव सहित सस्वर, समझते हुए प्रस्तुति करता है। * भावना एवं तनाव का समायोजन होता है।	
२	* नैतिक मूल्यों एवं अन्न सुरक्षा पर आधारित कथा प्रस्तुत करना। प्रिय खेल का परिचय देना। घड़ी देखकर समय बताना।	* नैतिक कथा चार्ट * चित्र चार्ट * खेलों के चित्र * घड़ी का माडेल	* नैतिक मूल्यों पर आधारित कथा रुचि लेते हुए सहजता से प्रस्तुत करता है। * कथा के भावानुरूप हावभाव सहित प्रस्तुति करता है। * खाद्य पदार्थों की बरबादी से बचता है। * कथा के पात्रों के साथ सहसंबंध प्रस्थापित करता है। सम–अनुभूति स्थापित होती है। * भावना एवं तनाव का समायोजन होता है। * अपने प्रिय खेल की उत्साहपूर्वक जानकारी देता है। * दूसरे विद्यार्थी द्वारा बताई गई कहानी का मुख्य भाव बताने की ओर अग्रसर होता है। * घड़ी देखकर समय बताता है। * समय पालन का महत्त्व समझता है।	* प्रात्यक्षिक * निरीक्षण * कक्षाकार्य * सहपाठी मूल्यांकन
३	* अपने तहसील जिले का परिचय देना। * त्योहार, मेला, घटना, प्रसंग आदि के चित्रों का आकलन करते हुए वर्णन करना।	* चित्र * चित्र चार्ट * फोल्डर्स * संदर्भ साहित्य * मानचित्र	* बातचीत में अपने तहसील/जिले की जानकारी देता है। * चित्र देखकर आपस में चर्चा करता है।	

अ. क्र.	अध्ययन अनुभव	अध्ययन-अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
			* त्योहार, मेला, घटना, प्रसंग आदि के चित्र देखकर आकलन करता है। * भाषण-संभाषण में स्वयंस्फूर्त होकर सहभागी होता है। * नए-नए शब्दों से परिचित होता है एवं वर्णन में शब्दों का प्रयोग करता है। * वर्णन क्षमता का विकास होता है।	
४	* विद्यालय में आयोजित वृक्षारोपण, जलसाक्षरता, बालिका दिवस पर चर्चा करना।	* चित्र * चित्र चार्ट * सी.डी. * डी.वी.डी. * ध्वनिफीत * संदर्भ साहित्य	* चर्चा में सहभागी होता है। * संबंधित उपक्रमों में सहभागी होता है। * उनका महत्व समझता है। * भाषण-संभाषण में आत्मविश्वास बढ़ता है।	* प्रात्यक्षिक * कृति * निरीक्षण * कक्षाकार्य * सहपाठी मूल्यांकन
५	* कक्षा के संदर्भ साहित्य कोने पर चर्चा करना।	* संदर्भ साहित्य कोना का चित्र-चार्ट	* संदर्भ साहित्य कोने में रखे गए चित्र का आकलन करता है। * संदर्भ साहित्य की उपयोगिता बताता है।	* प्रात्यक्षिक * निरीक्षण * कक्षाकार्य * सहपाठी मूल्यांकन

विषय : हिंदी (प्रथम भाषा) पाठ्यक्रम

भाषाई कौशल/क्षेत्र – वाचन **कक्षा : तीसरी**

अ. क्र.	अध्ययन अनुभव	अध्ययन–अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
	भाषाई खेल – 'वाचन की डगर पर मात्राओं का सफर' कृति : अध्यापक फलक पर अपूर्ण शब्द लिखें। विद्यार्थियों से पढ़ने के लिए कहें। विद्यार्थियों को शब्द की अपूर्णता ढूँढ़ने के लिए कहें। अर्थपूर्ण शब्द के लिए आवश्यक मात्राएँ लगाने की सूचना देना और वाचन करवाना। उदा. १. कसन — उत्तर – १) किसान २) किसन २. कतब — १) किताब	* रंगीन खड़िया * सफेद खड़िया	* फलक पर लिखे हुए शब्दों का वाचन करता है। * आपस में चर्चा करते हुए उचित मात्रा लगाकर शब्दों का वाचन करता है। * वाचन में मात्राओं का सही प्रयोग एवं सही उच्चारण करता है। * खेल में उत्साहपूर्वक सहभागी होता है। * मात्रा के बिना कुछ शब्द अपूर्ण होते हैं इससे अवगत होता है।	* निरीक्षण * प्रात्यक्षिक * कक्षाकार्य * सहपाठी मूल्यांकन
१.	श्रमप्रतिष्ठा, एकताविषयक बालगीत, बोधकथा का मुखर वाचन करना।	* संदर्भ साहित्य, कथा चार्ट, बालगीत चार्ट	* बालगीत एवं बोधकथा का हावभावयुक्त वाचन करता है। * समझते हुए वाचन करता है। * शुद्ध, स्पष्ट एवं मानक उच्चारण के साथ वाचन करने का प्रयत्न करता है।	* मौखिक * प्रात्यक्षिक * निरीक्षण * कक्षाकार्य * सहपाठी मूल्यांकन

अ. क्र.	अध्ययन अनुभव	अध्ययन–अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
			* पढ़े गए विषयों पर पूछे गए छोटे–छोटे प्रश्नों के उत्तर देता है। * प्रश्नों का वाचन करते हुए उचित उत्तर देता है। * तनावमुक्त होता है। भावनाओं का समायोजन होता है। * श्रमप्रतिष्ठा, एका आदि जीवनमूल्यों को अपनाता है। * बोधकथा के पात्रों से सहसंबंध स्थापित करता है।	* स्वाध्याय
२.	कविता, कथा (काल्पनिक, साहस कथा) का मुखर वाचन करना।	* संदर्भ साहित्य * कथा चार्ट * कविता चार्ट	* कथा, कविता का एकाग्रचित्त होते हुए वाचन करता है। * साहस कथा के माध्यम से साहसी वृत्ति का विकास होता है। * काल्पनिक कथा, कविता के माध्यम से कल्पनाशक्ति जागृत होती है। * कविता, कथा के भावानुरूप मानक वाचन की ओर उन्मुख होता है। * कविता, पाठ, कथाकथन प्रतियोगिता में सहभागी होता है।	* निरीक्षण * प्रात्यक्षिक * कक्षाकार्य * स्वाध्याय * सहपाठी मूल्यांकन * स्वाध्याय
३.	संवाद एवं परिच्छेदों का विराम चिह्नों सहित मुखर वाचन करना।	* संवाद चार्ट * परिच्छेद चार्ट * संदर्भ साहित्य।	* संवाद एवं परिच्छेद में आए विराम चिह्नों की ओर ध्यान देते हुए हावभाव एवं आरोह–अवरोह के साथ वाचन करता है। * संवाद, परिच्छेद पर आधारित पूछे गए प्रश्नों के उत्तर देने के लिए तत्पर होता है।	* निरीक्षण * प्रात्यक्षिक * कक्षाकार्य * स्वाध्याय * उपक्रम संवादों का संकलन

अ. क्र.	अध्ययन अनुभव	अध्ययन–अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
४.	मुहावरे, कहावतों से युक्त परिच्छेद का मुखर वाचन करना।	* मुहावरों– कहावतों के चार्ट। * संवाद, परिच्छेद के चार्ट * संगणक, सी.डी, डी.वी.डी. * संदर्भ साहित्य	* मुहावरों–कहावतों से युक्त परिच्छेदों का वाचन करता है। * दैनिक व्यवहार में मुहावरों, कहावतों का प्रयोग करता है। * मुहावरों, कहावतों के अर्थ और प्रयोग से परिचित होता है।	* निरीक्षण * प्रात्यक्षिक * कक्षाकार्य * सहपाठी मूल्यांकन * उपक्रम – * स्वाध्याय
५.	* मेला, सैर, समारोह, खेल आदि के वर्णन का मुखर वाचन करना।	* चित्र * चार्ट * संदर्भ साहित्य * फोल्डर	* मेला, सैर, समारोह, खेल आदि के वर्णन का वाचन करता है। * वाचन में रुचि लेता है। * शुद्ध एवं मानक वाचन की ओर उन्मुख होता है। * वाचन प्रतियोगिता में सहभागी होता है। * वाचन से आत्मविश्वास में वृद्धि होती है।	* निरीक्षण * प्रात्यक्षिक * कक्षाकार्य * सहपाठी मूल्यांकन * स्वाध्याय

विषय : हिंदी (प्रथम भाषा) पाठ्यक्रम

भाषाई कौशल/क्षेत्र – लेखन **कक्षा : तीसरी**

अ. क्र.	अध्ययन अनुभव	अध्ययन–अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
	भाषाई खेल – 'ढूँढ़ो तो जानें' कृति : कुछ शब्द श्यामपट्ट पर लिखना। विद्‌यार्थी द्‌वारा उन शब्दों से अलग–अलग नए शब्द बनाकर कापी में लिखवाना। जो विद्‌यार्थी सबसे अधिक शब्द बनाएगा उसका नाम फलक पर लिखना। शब्द बनाने वालों की सराहना करना। उदा. संदेशवाहक संदेश, वाहक, वाह, देश, संदेह, देह, हक, संवाहक, शक, सह, हवा, कहवा, आदि।	* फलक * रंगीन खड़ी * चार्ट * संदर्भ साहित्य	* खेल में रुचि लेता है। * नए–नए शब्द बनाकर लिखता है। * खेल के माध्यम से रचना कौशल एवं सृजनशीलता का विकास होता है। * अर्थपूर्ण शब्द बनाकर लिखने की वृत्ति जागृत होती है।	* निरीक्षण * प्रात्यक्षिक * कक्षाकार्य
१.	अनुलेखन–सुलेखन करना (वाक्य)	* वाक्य पट्‌टी * सुवचन पट्‌टी * घोषवाक्य पट्‌टी * रोलअप बोर्ड (Role up board)	* दिए गए वाक्यों का अनुलेखन सुलेखन करता है। * अनुलेखन–सुलेखन में रुचि लेता है। * सुवाच्य, सुपाठ्य लेखन की ओर अग्रसर होता है। * शुद्‌ध लेखन की ओर अग्रसर होता है। * सुलेखन प्रतियोगिता में सहभागी होता है।	* निरीक्षण * कक्षाकार्य * प्रात्यक्षिक * स्वाध्याय * उपक्रम –

अ. क्र.	अध्ययन अनुभव	अध्ययन-अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
२.	श्रुत लेखन - शुद्ध लेखन विराम चिह्नयुक्त वाक्यों का श्रुत लेखन, शुद्ध लेखन करना।	* परिच्छेद चार्ट * विराम चिह्नों का चार्ट	* ध्यानपूर्वक श्रुत लेखन करता है। * लेखन में शुद्धता की ओर ध्यान देता है। * लेखन में विरामचिह्नों का प्रयोग करता है। * शुद्ध एवं मानक लेखन की ओर उन्मुख होता है। * शुद्ध लेखन प्रतियोगिता में सहभागी होता है। * लेखन में सफाई एवं शुद्धता का महत्त्व समझता है। * निर्णयक्षमता का विकास होता है।	* निरीक्षण * प्रात्यक्षिक * कक्षाकार्य * सहपाठी मूल्यांकन * सहपुस्तक कसौटी * संकलित मूल्यमापन
३.	* पठित गद्य-पद्य के आधार पर पूछे गए छोटे-छोटे प्रश्नों के उत्तर लिखना। (एक शब्द में, दो-तीन वाक्यों में) * लिंग, वचन पहचानकर लिखना।	* चित्र * शब्द चार्ट * संदर्भ साहित्य	* पठित गद्य-पद्य के आधार पर पूछे गए प्रश्नों का आकलन करता है। * प्रश्न की सूचना की ओर ध्यान देते हुए प्रश्न का उत्तर लिखता है। * निर्णय क्षमता का विकास होता है। * गद्य-पद्य में आए हुए शब्दों का लिंग, वचन पहचानता है। * लिंग, वचन के रूप परिवर्तन से अवगत होते हुए लेखन करता है।	* निरीक्षण * प्रात्यक्षिक * कक्षाकार्य * सहपाठी मूल्यांकन * स्वाध्याय * कसौटी उपक्रम

अ. क्र.	अध्ययन अनुभव	अध्ययन–अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
४.	चित्र के आधार पर वर्णन एवं कहानी लिखना	* चित्र * चित्र चार्ट * कथा चित्र * कथा फोल्डर	* चित्र को ध्यानपूर्वक देखने में रुचि लेता है। * चित्र का आकलन करता है। * चित्र के बारे में अन्य विद्यार्थियों से चर्चा करता है। * चित्र का वर्णन लिखता है। * चित्र के आधार पर कहानी लिखता है। * विचार, कल्पनाशक्ति एवं सृजनशीलता का विकास होता है। * शब्दभंडार का विकास होता है।	* निरीक्षण * प्रात्यक्षिक * कृति * कक्षाकार्य * सहपाठी मूल्यांकन * कसौटी * स्वाध्याय * उपक्रम * प्रकल्प
५.	* स्वयंप्रेरणा से लेखन करना (स्वानुभव के आधार पर) * ५१ से ७५ तक के अंकों का अक्षरों में लेखन	* त्योहार चित्र/ * चार्ट * प्रसंग चार्ट * खेत के चित्र/चार्ट आदि	* अपने अनुभव के प्रसंग, घटना, खेल आदि का स्मरण करता है। * प्रसंग, घटना, खेल आदि के क्रमिक प्रसंगों का पुन:स्मरण करता है। * रचनात्मकता का विकास होता है। * शब्द, वाक्य आदि के मानक लेखन की ओर उन्मुख होता है। * लेखन में आत्मविश्वास निर्माण होता है। * ५१ ते ७५ तक के अंकों का अक्षरों में लेखन वाचन करता है। * दैनिक व्यवहार में अंकों तथा अक्षरों में लिखे अंकों का प्रयोग करता है।	* निरीक्षण * प्रात्यक्षिक * कक्षाकार्य * स्वाध्याय * लिखित कसौटी * उपक्रम * प्रकल्प

विषय : हिंदी (प्रथम भाषा) पाठ्यक्रम

भाषाई कौशल/क्षेत्र – व्यावहारिक सृजन **कक्षा : तीसरी**

अ. क्र.	अध्ययन अनुभव	अध्ययन–अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमपन
	भाषाई खेल – 'जान–पहचान' कृति : ५–६ विद्यार्थियों के कुछ गुट बनाना। कृषक एवं व्यवसायियों के काम की पर्चियाँ बनाकर एक जगह रखना। प्रत्येक गुट द्वारा एक–एक पर्ची उठाना। पर्ची पर लिखे कार्य के आधार पर व्यवसाय का नाम पहचानना और उनके बारे में बोलना। उदा. १) कपड़े की सिलाई करना। २) इंजेक्शन लगाना। ३) हल चलाना, आदि।	* पर्चियाँ * संदर्भ साहित्य	* विद्यार्थी खेल में आनंदपूर्वक सहभागी होता है। * गुट में चर्चा करता है। * कार्य और व्यवसाय के नामों में संगति बिठाने का प्रयास करता है। * किसी विषय पर चार–पाँच वाक्य बनाता है, बोलता है। * आत्मविश्वास में वृद्धि होती है। * व्यवसायियों एवं उनके काम के प्रति आत्मीयता निर्माण होती है।	* निरीक्षण * प्रात्यक्षिक * कक्षाकार्य * सहपाठी मूल्यांकन
१	अभिनय – * खाना बनाने की कृति का क्रमबद्ध अभिनय करना। * परिसर के कृषक एवं व्यवसायियों का एकल अभिनय करना।	* खाना बनाने की कृतियों का चार्ट * परिसर के व्यवसायियों के चित्र एवं चार्ट	* खाना बनाने की कृतियों का स्मरण करता है। उन कृतियों का क्रमबद्ध अभिनय करता है। * चित्र चार्ट देखकर व्यवसायियों के कार्य को याद करते हुए उनके कार्य का अभिनय करने की ओर उन्मुख होता है। * अभिनय कला की ओर उन्मुख होता है। आत्मविश्वास बढ़ता है। * खाना बनाने की विधि से परिचित होता है। * स्त्री–पुरुष समानता का भाव जागृत होता है। * कृषक एवं व्यवसायियों के श्रम के प्रति आदरभाव निर्माण होता है।	* प्रात्यक्षिक * कृति * निरीक्षण * कक्षाकार्य * सहपाठी मूल्यांकन

अ. क्र.	अध्ययन अनुभव	अध्ययन–अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
२	* व्यावसायिक संभाषण – * फेरीवालों द्वारा बोली जानेवाली व्यावसायिक बातों की नकल करना। * साइन बोर्ड (विज्ञापन फलक), टी.वी, रेडियो पर आए विज्ञापनों की मौखिक नकल करना।	* व्यवसायियों के चित्र, चार्ट, सी.डी., डी.वी.डी., संगणक, रेडियो, टी.वी. विज्ञापन पट्टी आदि। * संदर्भ साहित्य	* फेरीवालों द्वारा बोले जानेवाले व्यावसायिक संवादों की नकल करता है। * विज्ञापनों और व्यवसाय में संगति बिठाता है। * उनके शब्द विशेषों का स्मरण करते हुए हावभाव के साथ दोहराता है। * साइन बोर्ड (विज्ञापन फलक), टी.वी, रेडियो पर आए विज्ञापनों की मौखिक नकल करता है। * आत्मविश्वास, अभिव्यक्ति कौशल का विकास होता है। * आसपास के परिचित व्यवसायियों से बातचीत करने की ओर प्रवृत्त होता है।	* प्रात्यक्षिक * कृति * निरीक्षण * कक्षाकार्य * सहपाठी मूल्यांकन * मौखिक (साक्षात्कार)
३	कला – * आलू काटकर वर्णों की आकृति–वाला ठप्पा बनाना। * अपनी कापी में ठप्पा लगाना।	* आलू, कटर, स्याही, जलरंग, कागज, कापी आदि।	* आलू पर वर्ण की उलटी आकृति बनाता है। * उस आकृति को बनाते समय उचित कुशलता पाने की ओर अग्रसर होता है। * वर्णमाला के सभी वर्णों के मानक आकारों का दृढ़ीकरण होता है। * स्याही अथवा जलरंग वर्णों की खाँच में भरने का कौशल प्राप्त करता है। * उँगलियों को आलू, ब्रश आदि चीजें पकड़ने की आदत लगती है। * ठप्पा बनाकर कापी में लगाता है। * साफ–सूथरेपन की ओर अग्रसर होता है। * कलात्मकता का विकास होता है। * नवनिर्मिति का आनंद प्राप्त करता है।	* प्रात्यक्षिक * निरीक्षण * कृति – * कक्षाकार्य * स्वाध्याय * सहपाठी मूल्यांकन

अ. क्र.	अध्ययन अनुभव	अध्ययन-अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
४	रूपांतरण – ✻ परिसर के स्थल एवं वस्तुओं के लिए बोलियों में प्रयुक्त शब्दों का खड़ीबोली में रूपांतरण करना। उदा. बारना – प्रज्वलित करना गगरी – गागर रुपिया – रुपया इस्कूल – स्कूल सकूल – स्कूल इनारा – कुआँ घाटउपर – घाटकोपर कोहड़ा – कुम्हड़ा बरधा – बैल .... आदि	✻ बोलियों के शब्दों के चार्ट ✻ खड़ीबोली के शब्दों के चार्ट	✻ विविध बोलियों में बोले जानेवाले शब्द और उनके हिंदी के मानक रूप से परिचित होता है। ✻ अपनी बातचीत एवं लेखन में हिंदी के शब्दों का प्रयोग करता है। ✻ बोली भाषा के प्रति आत्मीयता जागृत होती है। बोली भाषा से मानक भाषा की ओर उन्मुख होता है। ✻ बोली एवं मानक हिंदी में सहसंबंध स्थापित करता है। ✻ बोली एवं खड़ीबोली के शब्दों का वर्गीकरण करता है। ✻ बोली एवं खड़ीबोली के शब्दों में अर्थ समानता एवं भिन्नता से परिचित होता है।	✻ प्रात्यक्षिक ✻ कृति ✻ मौखिककार्य ✻ निरीक्षण ✻ कक्षाकार्य ✻ स्वाध्याय ✻ सहपाठी मूल्यांकन ✻ उपक्रम
५	सांकेतिक चिह्न – ✻ अस्पताल चिह्न, कब, बुलबुल, के पदक एवं विद्यालय के चिह्नों का रेखन, लेखन करना।	✻ सांकेतिक चिह्नों का चार्ट ✻ चित्र चार्ट ✻ पदक के चार्ट ✻ संदर्भ साहित्य	✻ सांकेतिक चिह्नों पर चर्चा करता है। ✻ सांकेतिक चिह्नों का अर्थ समझते हुए रेखन करने की ओर प्रवृत्त होता है। ✻ चिह्नों का अर्थ समझते हुए लेखन करता है। ✻ सांकेतिक चिह्नों का महत्व समझते हुए तदनुरुप कृति करता है। ✻ कब, बुलबुल में प्रवेश लेने की ओर उन्मुख होता है। ✻ अनुशासन, नियमितता आदि गुणों का विकास होता है।	✻ प्रात्यक्षिक ✻ कक्षाकार्य ✻ स्वाध्याय ✻ सहपाठी मूल्यांकन ✻ उपक्रम ✻ मौखिककार्य

विषय : हिंदी (प्रथम भाषा) पाठ्यक्रम

भाषाई कौशल/क्षेत्र : श्रवण **कक्षा – चौथी**

अ. क्र.	अध्ययन अनुभव	अध्ययन-अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
	भाषाई खेल : 'सुनो और सुनाओ' **कृति** : शिक्षक या किसी एक विद्‌यार्थी द्‌वारा मात्रायुक्त कुछ शब्द बोलना, अन्य विद्‌यार्थियों द्‌वारा शब्द में आई ह्रस्व एवं दीर्घ मात्राएँ, वर्ण, सुनना, सुनाना, बताना। उदा. <u>कि</u>ता<u>ब</u>, <u>गु</u>ला<u>बी</u>	* ह्रस्व एवं दीर्घ मात्राओं के चार्ट। * मात्रायुक्त शब्द चार्ट। * संदर्भ साहित्य	* बोले गए शब्दों को ध्यानपूर्वक सुनता है। * सुने हुए शब्दों में आई ह्रस्व एवं दीर्घ मात्राओं को पहचानता है। दोनों के अंतर को पहचानता है। * ह्रस्व एवं दीर्घ मात्राओं और उनसे बने शब्द सहपाठियों को सुनाता है। * मात्राओं का दृढ़ीकरण होता है। * ह्रस्व एवं दीर्घ मात्रावाले शब्दों को स्वयंस्फूर्त भाव से सुनाता है। * शब्दसंपदा बढ़ती है। * श्रवण के माध्यम से मात्राओं एवं शब्दों के मानक रूप से परिचित होता है। * श्रवण में एकाग्रता बढ़ती है।	* निरीक्षण * मौखिककार्य * कृति * प्रात्यक्षिक * कक्षाकार्य * सहपाठी मूल्यांकन
१	* प्रकृति, पर्यावरणसंबंधी कविता, सुनना, सुनाना। (नैतिक मूल्यों पर आधारित दोहे)	* कविता * सी.डी, डी.वी.डी. * ध्वनिफीत * रेडियो, दूरदर्शन * संदर्भ साहित्य	* कविता ध्यानपूर्वक सुनता है। * सुनी हुई कविता हाव-भाव के साथ अन्य विद्‌यार्थियों को सुनाता है। * श्रवण के प्रति रुचि का विकास होता है। * कविता में आए नैतिक मूल्यों को आत्मसात करके उनपर चलने का प्रयास करता है।	* प्रात्यक्षिक * मौखिककार्य * निरीक्षण * कक्षाकार्य * सहपाठी मूल्यांकन

अ. क्र.	अध्ययन अनुभव	अध्ययन–अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
२	* साहस, देशप्रेमसंबंधी कथाएँ, सहशालेय उपक्रम	* कथा चार्ट * कथा फोल्डर * सहगामी उपक्रमों की सूची * सीडी., डी.वी.डी * ध्वनिफीत, रेडियो * दूरदर्शन आदि। * संदर्भ साहित्य	* साहस एवं देशप्रेम की कथा सुनने में रुचि लेता है। * उपरोक्त कथाएँ ध्यानपूर्वक सुनता है। * सुनी हुई कहानी अन्य विद्यार्थियों को सुनाता है। * साहसी बनता है। * देशप्रेम की भावना विकसित होती है। * राष्ट्रीय संपत्ति के प्रति आत्मीयता एवं संरक्षण की भावना जागृत होती है। * शब्दसंपत्ति का विकास होता है। * सहशालेय उपक्रमों के बारे में ध्यानपूर्वक सुनता है। * इन उपक्रमों में स्वयंस्फूर्त भाव से सहभागी होता है। * आत्मविश्वास बढ़ता है।	* प्रात्यक्षिक * मौखिककार्य * निरीक्षण * कक्षाकार्य * सहपाठी मूल्यांकन * उपक्रम
३	* बाल नाटक का अंश समझते हुए सुनना। तदनुरूप कृति करना।	* परिच्छेद * सीडी., डी.वी.डी * ध्वनिफीत, रेडियो * दूरदर्शन * संदर्भ साहित्य	* बाल नाटक के अंश को समझते हुए सुनने में रुचि लेता है। * बाल नाटक के अंश सुनकर उसमें सन्निहित भाव को समझता है। * सुने हुए बाल नाटक के अंश के भावानुरूप कृति करता है। * भावनाओं का समायोजन होता है।	* प्रात्यक्षिक * कृति * मौखिककार्य * निरीक्षण * कक्षाकार्य * सहपाठी मूल्यांकन

अ. क्र.	अध्ययन अनुभव	अध्ययन-अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
			✻ नाट्यांश के पात्रों से सम अनुभूति स्थापित करता है। ✻ रेडियो, दूरदर्शन पर आने वाले नाट्यांश के संवादों को ध्यानपूर्वक सुनने की ओर प्रवृत्त होता है। ✻ सुने हुए संवाद अन्य विद्यार्थियों को सुनाता है।	
४	✻ घटनाक्रम, प्रसंग के विवरण को ध्यानपूर्वक सुनना और क्रमानुसार सुनाना।	✻ घटना/प्रसंग के चार्ट ✻ सी.डी., डी.वी.डी ✻ ध्वनिफीत ✻ संदर्भ साहित्य	✻ घटनाक्रम, प्रसंग के विवरण को ध्यानपूर्वक सुनने में रुचि लेता है। ✻ घटनाक्रम, प्रसंग के विवरण को क्रमानुसार सुनाता है। ✻ घटना, प्रसंगों के माध्यम से भावना, तनाव का समायोजन होता है। ✻ एकाग्रचित्त होकर सुनने की ओर आकर्षित होता है। ✻ शब्द संपत्ति का विकास होता है। ✻ जीवन में क्रमबद्धता की ओर उन्मुख होता है।	✻ कृति ✻ प्रात्यक्षिक ✻ निरीक्षण ✻ कक्षाकार्य ✻ सहपाठी मूल्यांकन
५	✻ सुवचन, घोषवाक्य ध्यानपूर्वक सुनना, सुनाना।	✻ सुवचन पट्टियाँ ✻ घोषवाक्य पट्टियाँ ✻ रेडियो	✻ सुवचन, घोषवाक्य ध्यानपूर्वक सुनने में रुचि लेता है। ✻ उपरोक्त सुनी हुई सामग्री अन्य विद्यार्थियों को सुनाता है।	✻ प्रात्यक्षिक ✻ कृति ✻ निरीक्षण ✻ कक्षाकार्य ✻ सहपाठी मूल्यांकन

अ. क्र.	अध्ययन अनुभव	अध्ययन–अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
		❊ दूरदर्शन ❊ संगणक ❊ सी.डी., डी.वी.डी ❊ ध्वनिफीत ❊ संदर्भ साहित्य	❊ श्रवण के माध्यम से आकलन क्षमता विकसित होती है। ❊ सुवचन एवं घोषवाक्यों में आए मूल्यों को जीवन में उतारने का प्रयास करता है। ❊ शब्द संपत्ति में वृद्धि होती है।	

विषय : हिंदी (प्रथम भाषा) पाठ्यक्रम

भाषाई कौशल/क्षेत्र : भाषण-संभाषण **कक्षा - चौथी**

अ. क्र.	अध्ययन अनुभव	अध्ययन-अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
	भाषाई खेल : 'यदि मैं.........होता' (वृक्ष/नदी/फूल, तितली, चाँद आदि) **कृति** : विद्‌यार्थियों के गुट बनाना। अलग-अलग विषयों की अलग-अलग पर्चियाँ बनाना। एक-एक गुट को एक-एक पर्ची उठाने के लिए कहना। पर्ची में लिखित विषय को लेकर कल्पनायुक्त वाक्यों की श्रृंखला बनाकर बोलना।	* विषय की पर्चियाँ एवं विषय के चित्र	* खेल में रुचि लेता है। * विषय के संबंध में सोचता है। * गुट में चर्चा करता है। * गुट का प्रत्येक विद्‌यार्थी विषय पर अपनी कल्पना बताता है। * वाक्यरचना की क्षमता विकसित होती है। * कल्पनाशक्ति विकसित होती है। * अपने विषय को अधिकाधिक प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करने की ओर उन्मुख होता है। * पर्यावरण संरक्षण की भावना विकसित होती है।	* निरीक्षण * मौखिककार्य * प्रात्यक्षिक * कृति * कक्षाकार्य
१.	नैतिक मूल्यों पर आधारित दोहे, पद, कविता को सस्वर प्रस्तुत करना।	* दोहों के चार्ट * वाक्य पट्‌टी * कविता चार्ट	* नैतिक मूल्यों पर आधारित दोहे, पद, कविता प्रस्तुत करने में रुचि लेता है। * दोहे में निहित नैतिक मूल्य पहचानकर उसे जीवन में उतारने की ओर उन्मुख होता है। * पद, कविता को सस्वर प्रस्तुत करता है। * कविता पाठ प्रतियोगिता में सहभागी होता है।	* निरीक्षण * प्रात्यक्षिक * कृतिकार्य * कक्षाकार्य

अ. क्र.	अध्ययन अनुभव	अध्ययन-अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
			✻ कविता वाचन प्रतियोगिता में सहभागी होता है। ✻ भावना का समायोजन होता है। ✻ हिंदी की बोलियों के प्रति आत्मीयता विकसित होती है। ✻ शब्दभंडार विकसित होता है।	
२.	✻ साहस, देशप्रेमसंबंधी कथाएँ, दर्शनीय स्थलों की जानकारी बताना। ✻ सुने हुए आशय पर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर देना।	✻ दर्शनीय स्थलों के चित्र ✻ चित्र चार्ट ✻ सीडी., डी.वी.डी. ✻ संगणक, रेडियो ✻ संदर्भ साहित्य	✻ परिसर, जिला, राज्य के दर्शनीय स्थलों की जानकारी बताता है। ✻ सुने हुए आशय पर प्रश्न पूछता है। प्रश्नों के उत्तर देता है। ✻ देखे, सुने हुए स्थलों की जानकारी बताता है। ✻ सैर, पर्यटन आदि के प्रति रुचि जागृत होती है। ✻ अपनी सांस्कृतिक विरासत एवं देश के प्रति गौरव अनुभव करता है।	✻ निरीक्षण ✻ मौखिककार्य ✻ प्रात्यक्षिक ✻ कृति ✻ कक्षाकार्य ✻ सहपाठी मूल्यांकन ✻ **उपक्रम**

अ. क्र.	अध्ययन अनुभव	अध्ययन–अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
३.	* डाकघर, बाजार, स्वास्थ्य केंद्र के बारे में बताना।	* दूरदर्शन, रेडियो * चित्र * चार्ट	* डाकघर, बाजार, स्वास्थ्य केंद्र की जानकारी का स्मरण करता है। * इन घटकों की जानकारी बताता है। * सार्वजनिक स्थलों के प्रति आत्मीयता बढती है। देखभाल की भावना बढती है।	* निरीक्षण * मौखिककार्य * प्रात्यक्षिक * कृति * कक्षाकार्य * सहपाठी मूल्यांकन * **उपक्रम**
४.	* पालतू एवं जंगली प्राणियों की जानकारी बताना।	* चित्र, चित्र चार्ट * सी.डी., डी.वी.डी * संगणक * संदर्भ साहित्य	* प्राणियों के बारे में चर्चा करता है। * चर्चा के आधार पर आकलन करता है। * जानकारी देता है। * प्राणियों का वर्गीकरण करता है। * प्राणीजगत से आत्मीयता बढती है।	* निरीक्षण * प्रात्यक्षिक * मौखिककार्य * कृति * सहपाठी मूल्यांकन
५.	* बारहखड़ी, पंचमाक्षर, संयुक्ताक्षर, अनुस्वार, अनुनासिकयुक्त वर्णों से शब्द बनाना, शब्दों से वाक्य बनाकर बोलना।	* वर्ण कार्ड	* बारहखड़ी, पंचमाक्षर, संयुक्ताक्षर, अनुस्वार, अनुनासिकयुक्त वर्णों से नए–नए शब्द बनाकर वाक्य रचना करके बोलता है। * भाषिक कृतिशीलता एवं रचनात्मकता का विकास होता है। * वाक्य संरचना की प्राथमिक स्थिति से अवगत होता है।	* निरीक्षण * प्रात्यक्षिक * मौखिककार्य * कृति * सहपाठी मूल्यांकन

विषय : हिंदी (प्रथम भाषा) पाठ्यक्रम

भाषाई कौशल/क्षेत्र – वाचन **कक्षा : चौथी**

अ. क्र.	अध्ययन अनुभव	अध्ययन–अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
	भाषाई खेल – 'शब्दों के साथ, वाक्यों की बात' कृती : ५–५ विद्यार्थियों के गुट बनाना। निर्धारित वाक्य के शब्दों के अलग–अलग कार्ड बनाना। अलग–अलग विद्यार्थियों के गले में लटकाना/लटकवाना। बच्चों को बिखराकर खड़ा करना/कराना। दूसरे गुट के विद्यार्थियों द्वारा प्रथम गुट के विद्यार्थियों के गले के शब्दों का वाचन करना। वाक्य में आने वाले शब्दों का वाचन करना। वाक्य में आने वाले शब्दों के क्रम के अनुसार विद्यार्थियों को खड़ा करना–कराना। क्रमश: शब्दों से बने वाक्य का वाचन करना/कराना। उदा. १) [बल] [में] [होता] [एकता] [है] एकता में बल होता है। २) [शान] [धरती] [है] [की] [वृक्ष] वृक्ष धरती की शान है। इसी तरह अन्य शब्दों से बने वाक्यों का वाचन करवाना।	* शब्द कार्ड * धागा, सूई * वाक्यपट्टी * संदर्भ साहित्य	* खेल में रुचि लेता है। * शब्दों का वाचन करता है। * वाक्य के शब्दक्रमानुसार खड़ा रहता है। * शब्दकार्डों द्वारा बने हुए वाक्य का वाचन करता है। * खेल–खेल के माध्यम से वाचन की ओर उन्मुख होता है। * निर्णय क्षमता का विकास होता है। * तनाव और भावनाओं का समायोजन होता है।	* प्रात्यक्षिक * कृति * निरीक्षण * कक्षाकार्य * सहपाठी मूल्यांकन

अ. क्र.	अध्ययन अनुभव	अध्ययन-अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
१.	हास्यप्रधान, बालनाट्य, कथा (हितोपदेश आदि) का मुखर वाचन	* बालगीत चार्ट * कथा चार्ट * संदर्भ साहित्य	* हास्यप्रधान, बालनाट्य, कथा का हावभावयुक्त वाचन करता है। * समझते हुए मुखर वाचन करता है। * उचित आरोह-अवरोह के साथ मुखर वाचन करता है। * शुद्ध, स्पष्ट एवं मानक उच्चारण के साथ मुखर वाचन करता है। * पूछे गए प्रश्नों का वाचन करते हुए उचित उत्तर देता है। * भावनाओं का समायोजन होता है। * कथा में आए हुए जीवनमूल्य और जीवन कौशलों को अपनाता है। * नाट्यवाचन प्रतियोगिता में सहभागी होता है। * बालनाट्य एवं कथा के पात्रों से सम अनुभूति स्थापित करता है।	* प्रात्यक्षिक * कृति * निरीक्षण * कक्षाकार्य * सहपाठी मूल्यांकन * स्वाध्याय * उपक्रम
२.	कविता, नीतिपरक दोहे, विज्ञान कथा का मुखर वाचन करना। (अंधश्रद्धा निर्मूलन)	* विज्ञान कथा चार्ट * कविता चार्ट * दोहों की पट्टियाँ * दोहों का संच * संदर्भ साहित्य	* कविता, नीतिपरक दोहे एवं विज्ञानकथा का मुखर वाचन करता है। * कविता का हावभावयुक्त मुखर वाचन करता है। * बिना रुके, बेझिझक वाचन की ओर अग्रसर होता है। * आत्मविश्वास बढ़ता है। * आदर्श वाचन प्रतियोगिता में सहभागी होता है।	* प्रात्यक्षिक * कृति * निरीक्षण * कक्षाकार्य * सहपाठी मूल्यांकन * स्वाध्याय * उपक्रम

अ. क्र.	अध्ययन अनुभव	अध्ययन–अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
			* पूरक वाचन की ओर उन्मुख होता है। * विज्ञानकथा के माध्यम से वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास होता है। * नीतिपरक दोहों के माध्यम से मूल्यों के संस्कार होते है। * विज्ञानकथा के द्‌वारा कौतूहल भावना एवं जिज्ञासा वृत्ति का विकास होता है।	
३.	घटना, प्रेरक प्रसंग, सामाजिक त्योहारों के वर्णन का मुखर वाचन करना।	* वर्णन चार्ट * प्रेरक चित्र चार्ट * संदर्भ साहित्य	* घटना, प्रसंग, त्योहारों के वर्णन का मुखर वाचन करने में रुचि लेता है। * हाव–भाव, उचित आरोह–अवरोह के साथ मुखर वाचन करता है। * मानक उच्चारण से अवगत होकर शुद्‌ध वाचन करता है। * घटनाओं, प्रेरक प्रसंगों एवं त्योहारों में निहित मूल्यों, जीवन कौशलों से अवगत होता है। उन्हें जीवन में उतारने का प्रयास करता है। * आदर्श वाचन प्रतियोगिता में सहभागी होता है। * त्योहारों द्‌वारा अपनी सांस्कृतिक विरासत के प्रति गौरव की भावना विकसित होती है।	* प्रात्यक्षिक * कृति * निरीक्षण * कक्षाकार्य * सहपाठी मूल्यांकन * स्वाध्याय * उपक्रम
४.	समाचारपत्र का वाचन, जीवनी का वाचन, मुहावरों–कहावतों से युक्त परिच्छेद का वाचन।	* मुहावरों–कहावतों का चार्ट * समाचार पत्र * महान विभूतियों के चित्र, चार्ट * संदर्भ साहित्य	* समाचारपत्र, जीवनी, मुहावरों–कहावतों से युक्त परिच्छेद का रुचिपूर्वक वाचन करता है। * शुद्‌ध, स्पष्ट एवं मानक उच्चारण के साथ वाचन करता है।	* प्रात्यक्षिक * कृति * निरीक्षण * कक्षाकार्य * सहपाठी मूल्यांकन

अ. क्र.	अध्ययन अनुभव	अध्ययन-अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
			* जीवनी में आए हुए प्रेरक प्रसंगों और मूल्यों से अवगत होता है। उन्हें अपने जीवन में उतारने का प्रयास करता है। * मुहावरों-कहावतों में आए बोली भाषा के शब्दों से अवगत होता है। * बोली भाषा के प्रति आत्मीयता बढ़ती है। * परिच्छेद में आए मुहावरों-कहावतों का अर्थ समझते हुए व्यवहार में प्रयोग करता है। * मुहावरों-कहावतों के प्रयोग से भाषा में बढ़ने वाले प्रभाव से अवगत होता है।	* स्वाध्याय * उपक्रम
५.	यात्रा-वर्णन, निबंध का मुखर एवं मौन वाचन	* संदर्भ साहित्य	* यात्रा वर्णन, निबंध का मुखर वाचन करता है। * यात्रा-वर्णन, निबंध में आए हुए भावों और विचारों का आकलन करते हुए मुखर वाचन करता है। * आकलन करते हुए ध्यानपूर्वक मौन वाचन करता है। * वाचन के समय एकाग्रचित्त होने की क्षमता बढ़ती है। * यात्रावर्णन में आई हुई ऐतिहासिक, भौगोलिक विरासत से अप्रत्यक्ष रूप में अवगत होता है। * अपनी सांस्कृतिक विरासत के प्रति गौरव महसूस करता है।	* प्रात्यक्षिक * कृति * निरीक्षण * कक्षाकार्य * सहपाठी मूल्यांकन * स्वाध्याय * उपक्रम

विषय : हिंदी (प्रथम भाषा) पाठ्यक्रम

भाषाई कौशल/क्षेत्र : लेखन **कक्षा – चौथी**

अ. क्र.	अध्ययन अनुभव	अध्ययन–अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
	भाषाई खेल : 'वर्णों की छाँव से शब्दों के गाँव में' **कृति** : फलक/चार्ट पर मात्रा रहित/सहित वर्ण लिखना। उन वर्णों से विद्यार्थी द्वारा सार्थक शब्द बनाकर लिखना। बोर्ड पर लिखने के बाद सभी शब्दों को कापी में लिखना। उदा. क, का, म, ल, सा, रा, न, दा। कमरा, काम, मल, साल, सारा, दान, कान, दाल, मन, कम, काल, कल, काक। इस प्रकार अन्य वर्णों से शब्द बनाना।	* मात्रारहित/सहित सभी वर्ण कार्ड * संदर्भ साहित्य	* खेल में रुचि लेता है। * वर्णों से नए सार्थक शब्द बनाता है। वर्णों से सार्थक रचना करता है। * शब्द संपदा में वृद्धि होती है। * वर्णों का मानक लेखन करता है। * निर्णयक्षमता का विकास होता है।	* निरीक्षण * प्रात्यक्षिक * कृति * कक्षाकार्य
१.	सुलेखन : परिच्छेद का सुलेखन करना।	* परिच्छेद चार्ट * संदर्भ साहित्य	* परिच्छेद का सुलेखन करता है। वर्णों का मानक लेखन करता है। * परिच्छेद में आए हुए विरामचिह्नों को उचित जगह लगाकर लेखन करता है। * सुडौल एवं सुपाठ्य लेखन करता है। * सुलेखन प्रतियोगिता में सहभागी होता है।	* निरीक्षण * प्रात्यक्षिक * स्वाध्याय * सहपाठी मूल्यांकन * उपक्रम

अ. क्र.	अध्ययन अनुभव	अध्ययन-अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
२.	* विरामचिह्नयुक्त परिच्छेद का श्रुत लेखन-शुद्ध लेखन करना।	* संदर्भ साहित्य	* विरामचिह्नयुक्त परिच्छेद का श्रुतलेखन करता है। * ध्यानपूर्वक श्रुत लेखन करता है। * उच्चारण की ओर ध्यान देते हुए विराम चिह्नों का अपने लेखन में उचित प्रयोग करता है। * मानक एवं शुद्ध लेखन के प्रति सजग होता है। * निर्णयक्षमता में वृद्धि होती है। * लेखन में साफ-सुथरापन लाने का प्रयास करता है। शारीरिक और घर-परिसर की सफाई की ओर ध्यान देता है।	* निरीक्षण * प्रात्यक्षिक * सहपाठी मूल्यांकन * स्वाध्याय * स्वयं मूल्यांकन
३.	पठित पाठ/कविता के आधार पर प्रश्नों के उत्तर लिखना। * वस्तुनिष्ठ (एक शब्द या एक वाक्य में उत्तर) * लघूत्तरी (चार-पाँच वाक्यों में उत्तर)	* संदर्भ साहित्य	* उत्तर लिखने हेतु प्रश्नों को ध्यानपूर्वक सुनता है एवं पाठ/कविता ध्यानपूर्वक पढ़ता है। * पाठ/कविता के आधार पर पूछे गए प्रश्नों के वस्तुनिष्ठ तथा लघु (४-५ वाक्यों में) उत्तर लिखता है। * सही उत्तर लिखने हेतु आवश्यक निर्णयक्षमता विकसित होती है। * उत्तर लेखन विधि से परिचित होता है। * लेखन में आवश्यकता के अनुसार विराम चिह्नों का प्रयोग करता है। * शुद्ध लेखन प्रतियोगिता में सहभागी होता है।	* निरीक्षण * प्रात्यक्षिक * कृति * सहपाठी मूल्यांकन * स्वाध्याय * स्वयं मूल्यांकन
४.	* रूपरेखा के आधार पर निबंध, छोटी कहानी का लेखन करना।	* रूपरेखा के चार्टस (निबंध, कहानी के)	* दी गई रूपरेखा का आकलन करता है।	* निरीक्षण * प्रात्यक्षिक

अ. क्र.	अध्ययन अनुभव	अध्ययन–अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
		✻ संदर्भ साहित्य	✻ रूपरेखा का विस्तार करने हेतु विचारों का संयोजन करता है। ✻ रूपरेखा के आधार पर विचारों का क्रमशः लेखन करता है। ✻ रूपरेखा के आधार पर निबंध, कहानी लेखन करता है। ✻ शुद्ध एवं मानक वर्तनी के अनुसार लेखन करने के प्रति सजग होता है। ✻ स्वयंस्फूर्त लेखन की ओर अग्रसर होता है ✻ निबंध, कहानी लेखन में मुहावरों–कहावतों का प्रयोग करने का प्रयास करता है। ✻ मुद्दों के आधार पर क्रमशः लेखन करने की आदत पड़ती है। ✻ क्रमबद्ध लेखन की ओर उन्मुख होता है।	✻ कृति ✻ स्वाध्याय ✻ स्वयं मूल्यांकन
५.	✻ स्वअनुभव एवं जानकारी के आधार पर लेखन करना। ✻ व्यावहारिक अपूर्णांक संख्यांओं को अक्षरों में लिखना। $\frac{१}{४}$ – पाव $\frac{१}{२}$ – आधा $\frac{३}{४}$ – पौन $१\frac{१}{४}$ – सवा $१\frac{१}{२}$ – डेढ़	✻ विद्यार्थी से संबंधित दैनिक अनुभवों के चित्र। ✻ व्यावहारिक अपूर्णांकों का अक्षरों में लिखा चार्ट।	✻ अपने जीवन के अनुभवों को क्रमशः याद करता है। ✻ अपने अनुभव एवं प्राप्त जानकारी को क्रमशः लिखता है। ✻ स्वयंस्फूर्त लेखन में मुहावरों–कहावतों का प्रयोग करने का प्रयास करता है। ✻ रचनात्मकता का विकास होता है। ✻ अपूर्णांकयुक्त संख्याओं को अक्षरों में लिखता है। ✻ अपूर्णांकों का आकलन होता है। ✻ शुद्ध लेखन की ओर अग्रसर होता है।	✻ निरीक्षण ✻ प्रात्यक्षिक ✻ कृति ✻ कक्षा कार्य ✻ स्वाध्याय ✻ उपक्रम–

विषय : हिंदी (प्रथम भाषा) पाठ्यक्रम

भाषाई कौशल/क्षेत्र – व्यावहारिक सृजन **कक्षा : चौथी**

अ. क्र.	अध्ययन अनुभव	अध्ययन–अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
	भाषाई खेल – 'हावभाव की तरंग, बातों की उमंग' कृति : १) कक्षा में ५–६ विद्यार्थियों का गुट बनाना। २) दो गुटों को सामने बुलाना। उन्हें वाक्य निश्चित करने की सूचना देना। ३) एक गुट के विद्यार्थियों द्वारा आपस में चर्चा करके वाक्य निश्चित करना और बोलना। ४) दूसरे गुट के विद्यार्थियों द्वारा वाक्य सुनकर तद्नुसार अभिनय करना। उदा. एक गुट द्वारा दिया गया वाक्य मैं दौड़ती हूँ। दूसरे गुट द्वारा दौड़ने का अभिनय करना। इसी तरह अनेक कृतियाँ कराना।	–	* खेल में रुचि लेता है। * वाक्य रचना हेतु प्रत्येक विद्यार्थी चर्चा करता है। * वाक्य बनाकर बोलता है। * दूसरे गुट का प्रत्येक विद्यार्थी वाक्य सुनता है। * वाक्य में आए भाव का आकलन करता है। * वाक्य में आए भावानुसार अभिनय करता है। * तनाव का समायोजन होता है।	* प्रात्यक्षिक * कृति * निरीक्षण * कक्षाकार्य * सहपाठी मूल्यांकन

विषय : हिंदी (प्रथम भाषा) पाठ्यक्रम

भाषाई कौशल/क्षेत्र – व्यावहारिक सृजन **कक्षा : चौथी**

अ. क्र.	अध्ययन अनुभव	अध्ययन–अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
१.	अभिनय – १) माता–पिता तथा अभिभावक द्वारा की जानेवाली त्योहार की तैयारी की कृतियों का अभिनय करना। २) स्वतंत्रता दिवस की तैयारी करनेवाले शिक्षक की कृतियों का अभिनय करना।	* चित्र * चार्ट * संदर्भ साहित्य	* माता–पिता अभिभावक की कृतियों को याद करता है। * उन कृतियों का क्रमबद्ध अभिनय करता है। * कक्षा में अपने शिक्षक–शिक्षिका के तैयारी के संदर्भ में कृतियों को याद करता है। उनका अभिनय करता है। * अभिनय के प्रति रुझान बढ़ता है। * अभिनय के प्रति आत्मविश्वास बढ़ता है। * भावनाओं का समायोजन होता है।	* प्रात्यक्षिक * कृति * निरीक्षण * कक्षाकार्य * सहपाठी मूल्यांकन
२.	व्यावहारिक संभाषण – समाचारपत्र, रेडियो, दूरदर्शन पर आनेवाले स्तरीय विज्ञापनों को बोलकर साभिनय प्रस्तुत करना। (एकल एवं सामूहिक प्रस्तुति)	* समाचारपत्र * रेडियो * दूरदर्शन * विज्ञापनों के चित्र * विज्ञापनों के चार्ट	* समाचारपत्र, रेडियो, दूरदर्शन पर आने वाले स्तरीय विज्ञापनों का आकलन करता है। * आकलन के आधार पर हावभाव के साथ मुखर एवं आंगिक अभिनय करता है। * अभिव्यक्ति कौशल का विकास होता है।	* प्रात्यक्षिक * कृति * निरीक्षण * कक्षाकार्य * सहपाठी मूल्यांकन * उपक्रम
३.	कला – १) कार्ड पेपर, पुट्ठों पर वर्णों और शब्दों की आकृति काटना। पुट्ठों को कापी पर रखकर रंग या स्याहीयुक्त ब्रश फिराना।	* कार्ड पेपर * पुट्ठा * कैंची * कटर * जलरंग	* कार्ड पेपर, पुट्ठे पर वर्ण, शब्दों की आकृतियाँ काटता है। * उसे कापी पर रखकर जलरंग या स्याही का उपयोग करते हुए ब्रश फिराता है। * कापी पर अंकित हुए वर्णों, शब्दों की सजावट करता है।	* प्रात्यक्षिक * कृति * कक्षाकार्य * निरीक्षण * स्वाध्याय

अ. क्र.	अध्ययन अनुभव	अध्ययन-अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
	वर्ण कार्ड, शब्द कार्ड आदि अध्ययन-अध्यापन सामग्री की निर्मिति	✻ गोंद	✻ प्रिंटिंग कला के प्रति रूझान बढ़ता है। ✻ कलात्मक दृष्टिकोण का विकास होता है। ✻ कक्षा में वर्ण कार्ड, शब्द कार्ड, चित्र कार्ड आदि अध्ययन-अध्यापन सामग्री बनाता है। ✻ बनाए गए अध्ययन-अध्यापन सामग्री की कक्षा एवं शालेय स्तरपर प्रदर्शनी लगाता है। ✻ वर्णों और मात्राओं के मानक रूप का दृढ़ीकरण होता है।	✻ सहपाठी मूल्यांकन ✻ स्वयं मूल्यांकन ✻ उपक्रम
४.	रूपांतरण – शरीर के अवयव एवं दैनिक व्यवहार की बोलियों के शब्दों का मानक हिंदी में रूपांतरण करना। १) पोट – पेट बोट – उँगली अङुरी – अँगुली/उँगली आँखि – आँख निकुरा – नाक मूड़ – सिर आदि। २) आवा – आइए इहाँ – यहाँ उहाँ – वहाँ कउन – कौन आदि।	✻ बोलियों और खड़ी बोली के शब्दों के चार्ट	✻ शरीर के अवयवों के बोली में नाम एवं उनके मानक हिंदी के रूपों से अवगत होता है। ✻ दैनिक व्यवहार के बोली भाषा के शब्दों एवं उनके स्थान पर आनेवाले मानक हिंदी के शब्दों से परिचित होता है। ✻ बोली भाषा के प्रति आत्मीयता जागृत होती है। ✻ दैनिक व्यवहार में मानक हिंदी का प्रयोग करता है।	✻ कृति ✻ निरीक्षण ✻ कक्षाकार्य ✻ सहपाठी मूल्यांकन ✻ उपक्रम ✻ प्रकल्प

अ. क्र.	अध्ययन अनुभव	अध्ययन–अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
५.	सांकेतिक चिह्न – १) मानचित्र के चिह्नों का रेखन–लेखन करना। २) ० से ९ तक के अंकों के चिह्नों का अंतरराष्ट्रीय चिह्नों के रूप में लेखन करना।	* मानचित्र के चिह्नों का चार्ट। * मानचित्र। * शून्य से नौ तक के अंकों का चार्ट * अंतरराष्ट्रीय अंक चिह्न का चार्ट।	* चिह्नों के चार्ट, मानचित्र का वाचन करता है। * पहाड़, किला, नदी, कुआँ, झील, सड़क, धार्मिक स्थल, पुल, रेल्वे आदि चिह्नों का आकलन करता है। * इन चिह्नों का रेखन–लेखन करता है। * मानचित्र की सांकेतिक भाषा से परिचित होता है। * शून्य से नौ तक के हिंदी अंकों को अंतरराष्ट्रीय अंक चिह्न के रूप में लेखन करता है। * इन सांकेतिक चिह्नों का अपने लेखन में उपयोग करता है।	* प्रात्यक्षिक * निरीक्षण * कसौटी * सहपुस्तक कसौटी * स्वाध्याय * सहपाठी मूल्यांकन * उपक्रम * प्रकल्प * स्वयं मूल्यमापन